

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

25-जनवरी-2016 20:17 IST

प्रधानमंत्री का गुडगांव में अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन मुख्यालय के उद्घाटन समारोह पर संबोधन

मंच पर विराजमान फ्रांस के राष्ट्रपति श्रीमान ओलांद फ्रांस से आए हुए Senior Ministers हरियाणा के Governor श्री, मुख्यमंत्री श्री, श्रीमान पीयूष गोयल जी फ्रांस का Delegation और विशाल संख्या में आए हुए प्यारे भाइयों और बहनों!

पिछले एक वर्ष से सारी दुनियाँ में इस बात की चर्चा थी कि Global Warming के सामने दुनियाँ कौन से कदम उठाए किन बातों का संकल्प करे? और उसकी पूर्तिके लिए कौन से रास्ते अपनाएं? पेरिस में होने वाली COP 21 के संबंध में पूरी दुनियाँ में एक उत्सुकता थी, संबंधित सारे लोग अपने-अपने तरीके से उस पर प्रभाव पैदा करने का प्रयास कर रहे थे, और करीब-करीब दो सप्ताह तक दुनियाँ के सभी देशों ने मिल करके, इन विषयों के जो जानकारी लोग हैं वो विश्व के सारे वहाँ इकट्ठे आए चर्चाएं की और इस बड़े संकट के सामने मानव जातिकी रक्षा कैसे करें, उसके लिए संकल्पबद्ध हो करके आगे बढ़े।

COP 21 के निर्णयों के संबंध में तो विश्व में भली-भाँति बातें पहुँची हैं लेकिन पेरिस की धरती पर एक तरफ जब COP 21 की चर्चाएं चल रही थीं तब दो महत्वपूर्ण initiatives लिए गए। इन दोनों महत्वपूर्ण initiatives में भारत और फ्रांस ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है एक initiative एक तरफ तो Global Warming की चिन्ता है, मानवजातिको पर्यावरण के संकटों से रक्षित करना है और दूसरी तरफ मानवजातिके आवश्यकताओं की पूर्तिभी करनी है। जो Developing Countries हैं उन्हें अभी विकास की नई ऊँचाइयों को पार करना बाकी है और ऊर्जा के बिना विकास संभव नहीं होता है। एक प्रकार से ऊर्जा विकास यात्रा का अहमपूर्ण अंग बन गयी है। लेकिन अगर fossil fuel से ऊर्जा पैदा करते हैं तो Global Warming की चिन्ता सताती है और अगर ऊर्जा पैदा नहीं करते हैं तो, न सिर्फ अंधेरा छा जाता है जिन्दगी अंधेरे में डूब जाती है। और ऐसी दुविधा में से दुनियाँ को बचाने का क्या रास्ता हो सकता है? और तब जा करके अमेरिका, फ्रांस भारत तीनों ने मिल करके एक initiative लिया है और वो initiative है innovation का। नई खोज हो, नए संसाधन निर्माण हों, हमारे वैज्ञानिक, हमारे Technicians हमारे Engineers वो नई चीजें ले करके आएँ जोकि पर्यावरण पर प्रभाव पैदा न करती हों। Global Warming से दुनियाँ को बचाने का रास्ता दिखती हों और ऐसे साधनों को विकसित करें जो affordable हो sustainable हो और गरीब से गरीब व्यक्तिकी पहुँच में हो। तो innovation के लिए एक बहुत बड़ा अभियान चलाने की दिशा में अमेरिका, फ्रांस और भारत दुनियाँ के ऐसी सभी व्यवस्थाओं को साथ ले करके आगे बढ़ने का बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय किया उसको launch किया गया। President Obama, President Hollande और मैं और UN General Secretary और Mr. Bill Gates , हम लोग उस समारोह में मौजूद थे और एक नया initiative प्रारंभ किया। दूसरा एक महत्वपूर्ण निर्णय हुआ है जिसका आने वाले दसकों तक मानव जीवन पर बड़ा ही प्रभाव रहने वाला है।

दुनियाँ में कई प्रकार के संगठन चल रहे हैं। OPEC countries का संगठन है 20 है G 4 है, SAARC है, European Union है, ASEAN Countries हैं, कई प्रकार के संगठन दुनियाँ में बने हुए हैं। भारत ने एक विचार रखा विश्व के सामने कि अगर Petroleum पैदावार करने वाले देश इकट्ठे हो सकते हैं, African countries एक हो सकते हैं, European Countries एक हो सकते हैं, क्यों न दुनियाँ में ऐसे देशों का संगठन खड़ा किया जाए जिन देशों ने 300 दिवस से ज्यादा वर्ष में सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है। ये सूर्य, ये बहुत बड़ी शक्तिका स्रोत है सारे जीवन को चलाने में, सृष्टिको चलाने में सूर्य की अहम् भूमिका है। क्यों न हम उसको एक ताकत के रूप में स्वीकार करके विश्व कल्याण का रास्ता खोजें। 300 से अधिक दिवस, सूर्य का लाभ मिलता है ऐसे दुनिया में करीब-करीब 122 देश हैं। और इसलिए विचार आया क्यों न हम 122 देशों का जो किसूर्य शक्तिसे प्रभावित हैं उनका एक संगठन गढ़ें। भारत ने इच्छा प्रकट की फ्रांस के राष्ट्रपतिजी ने मेरी पूरी मदद की, हम कंधे से कंधा मिलाकरके चले, दुनियाँ के देशों का संपर्क किया और नवंबर महीने में पेरिस में जब conference चल रही थी, 30 नवंबर को दुनियाँ के सभी राष्ट्रों के मुखिया उस समारोह में मौजूद थे और एक International Solar Alliance इस नाम की संस्था का जन्म हुआ।

उसमें इस बात का भी निर्णय हुआ कि इसका Global Secretariat हिन्दुस्तान में रहेगा। ये International Solar Alliance इसका Headquarter गुडगाँव में बन रहा है। ये हरियाणा 'कुरुक्षेत्र' की धरती है, गीता का संदेश जहाँ से दिया, उस धरती से विश्व कल्याण का एक नया संदेश इस Solar Alliance के रूप में हम पहुँचा रहे हैं। बहुत कम लोगों को

अंदाज होगा कि आज ये जो घटना घट रही है उसका मानवजातिपर कितना बड़ा प्रभाव पैदा होने वाला है, इस बात को वही लोग समझ सकते हैं जो छोटे-छोटे Island पर बसते हैं, छोटे-छोटे Island Countries हैं और जिनके ऊपर ये भय सता रहा है किसमंदर के अगर पानी की ऊँचाई बढ़ती है तो पता नहीं कब उनका देश डूब जाएगा, पता नहीं वो इस सृष्टिसे समाप्त हो जाएंगे, दिन रात इन छोटे-छोटे देशों को चिन्ता हो रही है। जो देश समुद्र के किनारे पर बसे हैं, उन देशों को चिन्ता हो रही है कि अगर Global Warming के कारण समुद्र की सतह बढ़ रही है तो पता नहीं हमारे मुम्बई का क्या होगा, चेन्नई का क्या होगा? और दुनियाँ के ऐसे कई देश होंगे जिनके ऐसे बड़े-बड़े स्थान जो समुद्र के किनारे पर हैं उनके भाग्य का क्या होगा? सारा विश्व चिन्तित है। और मैं पिछले एक साल में, ये Island Countries हैं जो छोटे-छोटे उनके बहुत से नेताओं से मिला हूँ, उनकी पीड़ा को मैंने भली-भाँतिसमझा है। क्या भारत इस कर्तव्य को नहीं निभा सकता?

हमारे देश में जीवनदान एक बहुत बड़ा पुण्य माना जाता है। आज मैं कह सकता हूँ कि International Solar Alliance उस जीवनदान का पुण्य काम करने वाला है, जो आने वाले दशकों के बाद दुनियाँ पर उसका प्रभाव पैदा करने वाला है। सारा विश्व कहता है कि Temperature कम होना चाहिए, लेकिन Temperature कम करने का रास्ता भी सूर्य का Temperature ही है। एक ऊर्जा से दूसरी ऊर्जा का संकट मिटाया जा सकता है। और इसलिए विश्व को ऊर्जा के आवश्यकता की पूर्ति भी हो, innovation का काम भी हो और सोलर को ले करके जीवन के क्षेत्र कैसे प्रभावित हों उस दिशा में काम करने के लिए बना है।

ये बात सही है कि International Solar Alliance इसका Headquarters हिन्दुस्तान में हो रहा है, गुडगाँव में हो रहा है, लेकिन ये Institution हिन्दुस्तान की Institution नहीं है ये Global Institution है, ये Independent Institution है। जैसे अमेरिका में United Nations है, लेकिन वो पूरा विश्व का है। जैसे WHO है, पूरे विश्व का है। वैसे ही ये International Solar Alliance का Headquarter ये पूरे विश्व की धरोहर है और ये Independent चलेगा। अलग-अलग देश के लोग इसका नेतृत्व करेंगे, अलग-अलग देश के लोग इसकी जिम्मेदारी संभालेंगे, उसकी एक पद्धतिविकसित होगी लेकिन आज उसका Secretariat बन रहा है, उस Secretariat के माध्यम से इस बात को हम आगे बढ़ाना चाहते हैं।

भारत ने ऊर्जा के क्षेत्र में परंपरागत प्राकृतिक संसाधनों उपयोग करने का बीड़ा उठाया है। भारत ने जब ये कहा कि हम 175 Giga Watt, Renewable Energy की तरफ जाना चाहते हैं, तब दुनियाँ के लिए बड़ा अचरज था। भारत में Giga Watt शब्द भी नया है, जब हम Mega Watt से आगे सोच भी नहीं पाते थे। हम आज Giga Watt पर सोच रहे हैं और 175 Giga Watt Solar Energy, Wind Energy, Nuclear Energy, Biomass से होने वाली Energy इन सारे स्रोतों को Hydro Energy ये हम उपलब्ध कराना चाहते हैं और मुझे खुशी है कि आज भारत 5000 MW से ज्यादा solar energy उसने install कर दी। ये इतने कम समय में जो काम हुआ है वो उस commitment का परिणाम है कि क्या भारत मानव जाति के कल्याण के लिए मानव जाति की रक्षा के लिए, प्रकृति की रक्षा के लिए, ये पूरी जो सृष्टि है उस पूरी सृष्टि की रक्षा के लिए, भारत कोई अपना योगदान दे सकता है क्या? उस योगदान को देने के लिए ये बीड़ा उठाया है।

मैं फ्रांस के राष्ट्रपति का हृदय से आभारी हूँ कि इस चिन्ता के समय में global warming पर्यावरण के मुद्दे इसके समाधान के जो रास्ते हैं उनकी सोच भारत की सोच से बहुत मिलती जुलती है क्योंकि फ्रांस की values और भारत के values काफी समान है और इसलिए पिछले वर्ष April के महीने में हम दोनों मिले थे तो हमने तय किया था कि हम COP 21 के समय एक किताब निकालेंगे और विश्व के अंदर परंपरागत रूप से इन issues को कैसे देखा गया इस पर research करेंगे। और हम दोनों ने मिल कर के उस किताब की प्रस्तावना लिखी है और विश्व के सामने उन्हीं के मूलभूत चिन्तन क्या थे ये प्रस्तुत किया।

ये चीजें इसलिए हम कर रहे हैं कि मानव जाति को इस संकट से बचने के जो रास्ते खोजे जा रहे हैं, वो एक सामूहिक रूप से प्रयत्न हो, innovative रूप से प्रयत्न हो और परिणाम वो निकले जो मानव जाति की आवश्यकता है उसकी पूर्ति भी करे लेकिन प्रकृति को कोई नुकसान न हो। हम वो लोग हैं जिनके पूर्वजों ने, इस धरती से हमें प्यार करना सिखाया है। हमें कभी भी प्रकृति का शोषण करने के लिए नहीं सिखाया गया, हमें पौधे में भी परमात्मा होता है यह बचपन से सिखाया गया। ये हमारी परंपरा है। अगर ये परंपरा है तो हमें विश्व को उसका लाभ पहुंचे उस दिशा में हमें कुछ कर दिखाना चाहिए और उसी के तहत आज international solar alliance का हम लोगों ने एक Secretariat का आरम्भ कर रहे हैं। और भविष्य में भव्य भवन के रूप में उसका निर्माण हो, एक स्वंत्रत इमारत तैयार हो, उसके लिए शिलन्यास भी कर रहे हैं और इस काम के लिए आप पधारे इसका मैं बहुत बहुत आभारी हूँ।

मेरे लिए खुशी की बात है कि solar alliance का निर्माण हो रहा हो आज हमें Delhi से यहाँ आना था हम by road भी आ सकते थे, helicopter से भी आ सकते थे, लेकिन हम दोनों ने मिलकर तय किया कि अच्छा होगा की हम Metro से चले जाएँ और आज आप के बीच हमें Metro से आने का अवसर मिला।

मैं राष्ट्रपति जी का आभारी हूँ कि उन्होंने आज Metro में आने के लिए सहमति जताई और हम Metro का सफ़र करते करते आपके बीच पहुंचे क्योंकि वो भी एक सन्देश है क्योंकि global warming के सामने लड़ाई लड़ने के जो तरीके हैं उसमें ये भी एक तरीका है। मैं विश्वास करता हूँ कि ये प्रयास बहुत ही सुखद रहेगा। कल भारत प्रजासत्ता पर्व मनाने जा रहा है, इस प्रजासत्ता पर्व की पूर्व संध्या पर मैं देशवासियों को बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूँ और अधिकार और कर्तव्य इन दोनों को संतुलित करते हुए हम देश को आगे बढ़ाएंगे यही मेरी शुभकामना है।

बहुत बहुत धन्यवाद।

AKT/AK/HS/SBP/SS - 521

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

03-जनवरी-2016 18:32 IST

इंडियन साइंस कांग्रेस के 103वें सत्र में प्रधानमंत्री के उद्घाटन भाषण का मूल पाठ

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज मैसूर विश्वविद्यालय में 103वीं इंडियन साइंस कांग्रेस में उद्घाटन भाषण दिया। इस साल की कांग्रेस का विषय 'भारत में स्वदेशी विकास के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी' है।

प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर 103वीं आईएससी पूर्ण कार्यवाही और टेक्नोलॉजी विज़न 2035 दस्तावेज भी जारी किया। उन्होंने वर्ष 2015-16 के लिए आईएससीए पुरस्कार भी प्रदान किए।

प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ निम्नलिखित है:-

कर्नाटक के राज्यपाल श्री वजुभाई वाला

कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री सिद्धारमैया

मेरे मंत्रिमंडलीय सहयोगीगण, डॉ. हर्षवर्धन और श्री वाई.एस. चौधरी

भारत रत्न प्रोफेसर सी.एन.आर. राव

प्रोफेसर ए.के. सक्सेना

प्रोफेसर के.एस. रंगप्पा

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित महानुभावों और फील्ड मेडलिस्ट

विशिष्ट वैज्ञानिकों एवं प्रतिनिधियों,

भारत और विश्व के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र के अग्रणी महानुभावों के साथ वर्ष की शुरुआत करना बेहद सौभाग्य की बात है।

भारत के भविष्य के प्रति हमारे विश्वास की वजह आप पर हमारा भरोसा है।

मैसूर विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष में 103वीं साइंस कांग्रेस को संबोधित करने का अवसर पाना बेहद सम्मान और सौभाग्य की बात है।

भारत के कुछ महान नेताओं ने इसी प्रतिष्ठित संस्थान से विद्या प्राप्त की है।

महान दार्शनिक और देश के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन और भारत रत्न प्रोफेसर सी.एन.आर. राव उन्हीं में से हैं।

साइंस कांग्रेस और मैसूर विश्वविद्यालय का इतिहास करीब-करीब एक ही दौर में प्रारंभ हुआ।

वह समय भारत में नव जागरण का था। उसने केवल भारत में स्वाधीनता नहीं, बल्कि मानव प्रगति की भी मांग की।

वह सिर्फ स्वतंत्र भारत ही नहीं चाहता था, बल्कि एक ऐसा भारत चाहता था, जो अपने मानव संसाधनों, वैज्ञानिक क्षमताओं और औद्योगिक विकास की ताकत के बल पर स्वतंत्र रूप से खड़ा रह सके।

यह विश्वविद्यालय भारतीयों की महान पीढ़ियों के विज्ञान का साक्षी है।

अब, हमने भारत में सशक्तिकरण और अवसरों की एक अन्य क्रांति प्रारंभ की है।

इतना ही नहीं, हमने मानव कल्याण और आर्थिक विकास के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए एक बार फिर से अपने वैज्ञानिकों और अन्वेषकों का रुख किया है।

विश्व ने ज्ञान के लिए मनुष्य की पड़ताल और अन्वेषण की प्रवृत्ति की वजह से, लेकिन साथ ही, मानव चुनौतियों से निपटने के लिए प्रगति की है।

दिवंगत राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से ज्यादा किसी अन्य ने इस भावना को परिलक्षित नहीं किया।

उनका जीवन बेमिसाल वैज्ञानिक उपलब्धियों से भरपूर था और वे मानवता के प्रति असीम करुणा और चिंता का भाव रखते थे।

उनके लिए, विज्ञान का सर्वोच्च उद्देश्य कमजोर, सुविधाओं से वंचित लोगों तथा युवाओं के जीवन में बदलाव लाना था।

और, उनके जीवन का मिशन आत्मनिर्भर और आत्मविश्वास से भरपूर भारत था, जो मजबूत हो और अपने नागरिकों की सरपरस्ती करे।

इस कांग्रेस के लिए आपका विषय उनके विज्ञान को उपयुक्त श्रद्धांजलि है।

और, प्रोफेसर राव और राष्ट्रपति कलाम जैसे राह दिखाने वालों और आप जैसे वैज्ञानिकों ने भारत को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के बहुत से क्षेत्रों में सबसे अग्रणी स्थान दिलाया है।

हमारी सफलता का दायरा छोटे से अणु के केन्द्र से लेकर अंतरिक्ष की विस्तीर्ण सीमा तक फैला है। हमने खाद्य और स्वास्थ्य सुरक्षा में वृद्धि की है और हमने दुनिया में अन्य लोगों में अच्छी जिंदगी का विश्वास जगाया है।

जब हम अपनी जनता की महत्वाकांक्षाओं के स्तर में वृद्धि करते हैं, तो हमें अपने प्रयासों का स्तर भी बढ़ाना पड़ता है।

इसलिए, मेरे लिए सुशासन का आशय नीति बनाना और निर्णय लेना, पारदर्शिता और जवाबदेही मात्र नहीं है, बल्कि हमारे विकल्पों और रणनीतियों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को शामिल करना भी है।

हमारे डिजिटल नेटवर्क गुणवत्ता बढ़ा रहे हैं तथा जन सेवाओं और सामाजिक लाभ को गरीबों तक पहुंचा रहे हैं। इतना ही नहीं, प्रथम राष्ट्रीय अंतरिक्ष सम्मेलन में हमने शासन, विकास और संरक्षण के लगभग प्रत्येक पहलु को छूने वाले 170 अनुप्रयोगों की पहचान की।

हम स्टार्टअप इंडिया लांच करने जा रहे हैं, जो नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहन देगा। हम अकादमिक संस्थानों में टेक्नोलॉजी इन्क्यूबेटर बना रहे हैं। मैंने सरकार में वैज्ञानिक विभागों और संस्थानों में वैज्ञानिक लेखा परीक्षा की रूपरेखा तैयार करने को कहा है।

यह सहयोगपूर्ण संघवाद की भावना के अनुरूप है, जो प्रत्येक क्षेत्र में केन्द्र राज्य संबंधों को आकार दे रही है, जो में केन्द्रीय और राज्य स्तरीय संस्थाओं और एजेंसियों के बीच व्यापक वैज्ञानिक सहयोग को प्रोत्साहन दे रहा हूं।

हम विज्ञान के लिए अपने संसाधनों का स्तर बढ़ाने की कोशिश करेंगे और उन्हें हमारी रणनीतिक प्राथमिकताओं के अनुरूप लगाएंगे।

हम भारत में विज्ञान और अनुसंधान को सुगम बनाएंगे, विज्ञान प्रशासन में सुधार करेंगे और आपूर्ति का दायरा बढ़ाएंगे तथा भारत में विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता में सुधार लाएंगे।

उसी समय, नवाचार सिर्फ हमारे विज्ञान का ही लक्ष्य नहीं होना चाहिए। नवाचार वैज्ञानिक प्रक्रिया को भी अवश्य गति प्रदान करे। किराया नवाचार और क्राउडसोर्सिंग प्रभावी और कारगर वैज्ञानिक उद्यम के उदाहरण हैं।

और, दृष्टिकोण में नवाचार सिर्फ सरकार का ही दायित्व नहीं है, बल्कि निजी क्षेत्र और शैक्षणिक समुदाय की भी जिम्मेदारी है।

ऐसे विश्व में जहां संसाधनों की बाध्यताएं और प्रतिस्पर्धी दावे हैं, हमें अपनी प्राथमिकताओं को बुद्धिमानी से परिभाषित करना होगा। और, भारत के लिए यह खासतौर पर महत्वपूर्ण है, जहां कई और बड़े पैमाने पर चुनौतियां हैं – स्वास्थ्य और भूख से लेकर ऊर्जा और अर्थव्यवस्था तक।

माननीय प्रतिनिधियों,

आज मैं आप के साथ जिस विषय पर चर्चा करना चाहता हूं वह दुनिया की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है और उसने पिछले साल प्रबलता से विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया- हमारी दुनिया के लिए ज्यादा समृद्ध भविष्य तथा हमारे ग्रह के लिए ज्यादा टिकाऊ भविष्य के मार्ग को परिभाषित करना।

वर्ष 2015 में विश्व ने दो ऐतिहासिक कदम उठाए।

पिछले सितंबर, संयुक्त राष्ट्र ने 2030 के लिए विकास के एजेंडे को स्वीकार किया। यह 2030 तक गरीबी के उन्मूलन और आर्थिक विकास को हमारी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में रखता है, लेकिन साथ ही यह हमारे पर्यावरण और हमारे पर्यावासों पर समान रूप से बल देता है।

और, पिछले नवंबर पेरिस में विश्व ने एकजुट होकर हमारे ग्रह की धारा बदलने के लिए एक ऐतिहासिक समझौता किया।

लेकिन, हमने कुछ और भी हासिल किया, जो इतना ही महत्वपूर्ण है।

हम जलवायु परिवर्तन के विचार विमर्श के केन्द्र में नवाचार और प्रौद्योगिकी को लाने में सफल रहे।

हमने तर्कसंगत रूप से यह संदेश दिया कि सिर्फ लक्ष्यों और अंकुश के बारे में बोलना ही काफी नहीं होगा। ऐसे समाधान ढूँढना अनिवार्य है, जो हमें स्वच्छ ऊर्जा के भविष्य में सुगमता से ले जाने में मदद करें।

हमने पेरिस में यह भी कहा कि नवाचार सिर्फ जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ही नहीं, बल्कि जलवायु न्याय के लिए भी महत्वपूर्ण है।

सभी के लिए स्वच्छ ऊर्जा को उपलब्ध, गम्य और किफायती बनाने के लिए हमें अनुसंधान और नवाचार करना होगा।

पेरिस में राष्ट्रपति होलांद, राष्ट्रपति ओबामा और मैंने एक नवाचार शिखर सम्मेलन के लिए विश्व के कई नेताओं को साथ जोड़ा।

हमने नवाचार और सरकारों के उत्तरदायित्व को निजी क्षेत्र की नवीन क्षमता के साथ जोड़ने वाली वैश्विक भागीदारी कायम करने के लिए राष्ट्रीय निवेश दोगुना करने का संकल्प लिया।

मैंने ऊर्जा के उत्पादन, वितरण और उपभोग करने के हमारे तरीकों में बदलाव लाने पर अगले दस वर्षों तक ध्यान केंद्रित करने के लिए 30-40 विश्वविद्यालयों और प्रयोगशालाओं का एक अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क तैयार करने का भी सुझाव दिया। हम जी-20 में भी इसका अनुसरण करेंगे।

हमें नवीकरणीय ऊर्जा को और ज्यादा किफायती, ज्यादा विश्वसनीय और ट्रांसमिशन ग्रिड्स के साथ जोड़ना सुगम बनाने के लिए नवाचार की आवश्यकता है।

भारत के लिए यह विशेष तौर पर महत्वपूर्ण है कि हम 2022 तक 175 जीडब्ल्यू नवीकरणीय उत्पादन जोड़ने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

हमें आवश्यकत तौर पर कोयले जैसे जीवाश्म ईंधन को स्वच्छ और ज्यादा प्रभावी बनाना होगा। साथ ही हमें महासागर की लहरों से लेकर भूतापीय ऊर्जा तक नवीकरणीय ऊर्जा के नए स्रोतों का उपयोग करना होगा।

ऐसे समय में, जब औद्योगिक युग को ईंधन प्रदान करने वाले ऊर्जा के स्रोतों ने हमारे ग्रह को संकट में डाल दिया है और विकासशील देशों को अब अरबों लोगों को समृद्ध बनाना है, तो ऐसे में विश्व को भविष्य की ऊर्जा के लिए सूर्य की ओर रुख करना होगा।

इसलिए, पेरिस में, भारत ने सौर ऊर्जा समृद्ध देशों के बीच भागीदारी कायम करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन प्रारम्भ किया है।

हमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की आवश्यकता मात्र स्वच्छ ऊर्जा को हमारे अस्तित्व का अभिन्न अंग बनाने के लिए ही नहीं है, बल्कि हमारे जीवन पर पड़ने वाले जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए भी है।

हमें कृषि को जलवायु के मुताबिक ढलने वाली (क्लाइमेट रिज़िलियन्ट) बनाना होगा। हमें हमारे मौसम, जैव विविधता, हिमनदों और महासागरों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और उनसे सामंजस्य बनाने के तरीके को समझना होगा। हमें प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान लगाने की योग्यता को भी अवश्य मजबूत बनाना होगा।

माननीय प्रतिनिधियों,

हमें तेज रफ्तार से हो रहे शहरीकरण की उभरती चुनौतियों से भी हर हाल में निपटना होगा। धारणीय विश्व के लिए यह महत्वपूर्ण होगा।

मानव इतिहास में पहली बार, हम एक शहरी सदी में हैं। इस सदी के मध्य तक विश्व की दो-तिहाई आबादी शहरों में बसने लगेगी। 3.0 बिलियन से कुछ कम लोग शहरों में बसे मौजूदा 3.5 बिलियन लोगों के साथ आ जुड़ेंगे। इतना ही नहीं, इस वृद्धि का 90 प्रतिशत विकासशील देशों में होगा।

एशिया के कई शहरी क्लस्टरों की आबादी दुनिया के अन्य मझोले आकार के देशों की आबादी से ज्यादा हो जाएगी।

2050 तक 50 फीसदी से ज्यादा भारत शहरों में रह रहा होगा और 2025 तक वैश्विक शहरी आबादी का 10 फीसदी भारत से हो सकता है।

अध्ययन से पता चलता है कि लगभग 40 फीसदी वैश्विक शहरी आबादी अनौपचारिक आश्रय स्थलों या बस्तियों में रहती है, जहां उन्हें कई स्वास्थ्य और पोषण संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

आर्थिक वृद्धि, रोजगार के अवसरों और संपन्नता को गति शहरों से ही मिलती है। लेकिन शहरों से ही दो तिहाई वैश्विक ऊर्जा मांग निकलती है और नतीजतन 80 फीसदी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। यही वजह है कि मैं स्मार्ट शहरों (स्मार्ट सिटी) पर इतना ज्यादा जोर दे रहा हूं।

सिर्फ शहरों को ही ज्यादा कुशल, सुरक्षित और सेवाओं की डिलिवरी के लिहाज से बेहतर बनाने की योजना नहीं है, बल्कि उनकी ऐसे टिकाऊ शहरों के विकास की भी योजना है जिनसे हमारी अर्थव्यवस्थाओं को गति मिले और जो स्वस्थ जीवन शैली के लिए स्वर्ग की तरह हों।

हमें अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए बेहतर नीतियों की जरूरत है, लेकिन हम रचनात्मक समाधान उपलब्ध कराने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर निर्भर होंगे।

हमें स्थानीय पारिस्थितिकी और विरासत के प्रति संवेदनशीलता के साथ शहरी योजना में सुधार के लिए बेहतर वैज्ञानिक उपकरण विकसित करने चाहिए, जिससे परिवहन की मांग में कमी आए, गतिशीलता में सुधार हो और भीड़-भाड़ में कमी आए।

हमारे अधिकांश शहरी बुनियादी ढांचे का निर्माण होना अभी बाकी है। हमें वैज्ञानिक सुधारों के साथ स्थानीय सामग्री का इस्तेमाल अधिकतम करना चाहिए; और इमारतों को ऊर्जा के लिहाज से ज्यादा कुशल बनाना चाहिए।

हमें ठोस कचरा प्रबंधन के लिए कफायती और व्यावहारिक समाधान तलाशने हैं; कचरे से निर्माण सामग्री और ऊर्जा बनाने; और दूषित जल के पुनर्चक्रिकरण पर भी ध्यान देना है।

शहरी कृषि और पारिस्थितिकी पर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए। और हमारे बच्चों को सांस लेने के लिए स्वच्छ शहरी हवा मिलनी चाहिए। साथ ही हमें ऐसे समाधानों की जरूरत है जो व्यापक और विज्ञान व नवाचार से जुड़े हुए हों।

हमें अपने शहरों को प्राकृतिक आपदाओं के प्रति ज्यादा प्रतिरोधी और अपने घरों को ज्यादा लचीला बनाने के लिए आपके सहयोग की जरूरत है। इसका मतलब इमारतों को ज्यादा कफायती बनाना भी है।

सम्मानित प्रतिनिधियों,

इस ग्रह का टिकाऊ भविष्य सिर्फ इस बात पर निर्भर नहीं करेगा कि हम धरती पर क्या करते हैं, बल्कि इस पर भी निर्भर करेगा कि हम अपने समुद्रों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

हमारे ग्रह के 70 प्रतिशत हिस्से पर समुद्र हैं; और 40 फीसदी से ज्यादा आबादी और दुनिया के 60 फीसदी बड़े शहर समुद्र तट के 100 किलोमीटर के दायरे में आते हैं।

हम नए युग के मुहाने पर हैं, जहां समुद्र हमारी अर्थव्यवस्थाओं के लिए बेहद अहम हो जाएंगे। उनका टिकाऊ इस्तेमाल संपन्नता ला सकता है और हमें सिर्फ मछली पकड़ने के अलावा स्वच्छ ऊर्जा, नई दवाएं व खाद्य सुरक्षा भी दे सकता है।

यही वजह है कि मैं छोटे द्वीपीय राज्यों को बड़े समुद्री राज्यों के तौर पर उल्लेख करता हूँ।

समुद्र भारत के भविष्य के लिए भी काफी अहम है, जहां 1,300 द्वीप, 7,500 किलोमीटर लंबा समुद्र तट और 24 लाख वर्ग किलोमीटर विशेष आर्थिक क्षेत्र आते हैं।

यही वजह है कि बीते साल हमने समुद्र या नीली अर्थव्यवस्था पर अपना ज्यादा ध्यान केंद्रित किया है। हम सामुद्रिक विज्ञान में अपने वैज्ञानिक प्रयासों के स्तर को बढ़ाएंगे।

हम समुद्र जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी के लिए एक उन्नत शोध केंद्र की स्थापना करेंगे और भारत व विदेश में एक तटीय व द्वीप शोध स्टेशनों का एक नेटवर्क भी स्थापित करेंगे।

हमने कई देशों के साथ सामुद्रिक विज्ञान और समुद्र अर्थव्यवस्था पर समझौते किए हैं। हम 2016 में नई दिल्ली में 'ओसीन इकोनॉमी एंड पैसिफिक आइसलैंड कंट्रीज' (समुद्री अर्थव्यवस्था और प्रशांत द्वीपीय देशों) पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन करेंगे।

सम्मानित प्रतिनिधियों,

समुद्रों की तरह नदियों की मानव इतिहास में एक अहम भूमिका रही है। सभ्यताएं नदियों के द्वारा ही पली-बढ़ी हैं। और नदियां हमारे भविष्य के लिए भी अहम रहेंगी।

इसलिए नदियों का पुनरुद्धार मेरी अपने समाज के लिए एक स्वच्छ और सेहतमंद भविष्य, हमारे लोगों के लिए आर्थिक अवसरों और हमारी धरोहर के नवीकरण के लिए प्रतिबद्धता का अहम हिस्सा है।

हमें अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए नियमन, नीति, निवेशों और प्रबंधन की जरूरत है। लेकिन ऐसा सिर्फ अपनी नदियों को स्वच्छ बनाकर ही नहीं, बल्कि उन्हें भविष्य में भी स्वस्थ बनाए रखकर ही संभव होगा। इसके लिए हमें अपने प्रयासों के साथ तकनीक, इंजीनियरिंग और नवाचार को जोड़ना होगा।

इसके लिए हमें शहरीकरण, कृषि, औद्योगीकरण और भूमिगत जल के इस्तेमाल और नदियों पर प्रदूषण के प्रभाव की वैज्ञानिक समझ की जरूरत है।

नदी प्रकृति की आत्मा है। उनका नवीकरण टिकाऊ पर्यावरण की दिशा में एक बड़ा प्रयास हो सकता है।

भारत में हम मानवता को प्रकृति के हिस्से के तौर पर देखते हैं, न उससे अलग या उससे ज्यादा और देवता प्रकृति में विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं।

इस प्रकार संरक्षण प्राकृतिक रूप से हमारी संस्कृति और परंपरा व भविष्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता से गहराई से जुड़ा हुआ है।

भारत में पारिस्थितिकी ज्ञान की एक संपन्न धरोहर है। हमारे पास वैज्ञानिक संस्थान और मानव संसाधन हैं, जिनसे प्रकृति के संरक्षण पर ठोस राष्ट्रीय योजना को गति दी जा सकती है। यह वैज्ञानिक अध्ययन और प्रक्रियाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है।

सम्मानित प्रतिनिधियों,

यदि हम मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य चाहते हैं तो हमें पारंपरिक ज्ञान को पूरी तरह इस्तेमाल करना चाहिए।

दुनिया भर में समाजों ने युगों से मिले ज्ञान के दम पर अपनी संपन्नता को बढ़ाया है। और उनके पास हमारी कई समस्याओं के आर्थिक, कुशल और पर्यावरण के अनुकूल समाधानों के राज हैं। लेकिन आज वे हमारी भूमंडलीकृत दुनिया में समाप्त होने के कगार पर हैं।

पारंपरिक ज्ञान की तरह विज्ञान भी मानव अनुभवों और प्रकृति की खोज के माध्यम से विज्ञान भी विकसित हुआ है। इसलिए हमें उस विज्ञान को मान्यता देनी चाहिए, जो दुनिया के बारे में अनुभवजन्य ज्ञान के रूप में तैयार नहीं होता है।

हमें पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच की दूरी को पाटना चाहिए, जिससे हम अपनी चुनौतियों के लिए स्थानीय और ज्यादा टिकाऊ समाधान तैयार कर सकते हैं।

इसलिए कृषि में जैसे हम अपने खेतों को ज्यादा उपजाऊ बनाते हैं, उसी प्रकार अपने पानी के इस्तेमाल में कमी या अपनी कृषि उपज में पोषक तत्वों को बढ़ाने पर काम करना चाहिए।

हमें पारंपरिक तकनीकों, स्थानीय पद्धतियों और जैविक कृषि को एकीकृत करना चाहिए, जिससे हमारी कृषि में कम से कम संसाधन इस्तेमाल हों और वह ज्यादा लचीली हो।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में आधुनिक दवाओं ने हेल्थकेयर को बदल दिया है। लेकिन हमें बेहतर जीवनशैली और उपचार के तरीकों में बदलाव के लिए वैज्ञानिक तकनीकों और तरीकों को पारंपरिक दवाओं और योग जैसी प्रक्रियाओं का भी इस्तेमाल करना चाहिए।

यह विशेष रूप से जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों की बढ़ती चुनौती का सामना करने के लिहाज से अहम है, जिससे मानवीय जिंदगी और आर्थिक तौर पर बड़ा नुकसान होता है।

सम्मानित प्रतिनिधियों,

एक राष्ट्र के तौर पर हम अभी तक कई दुनियाओं में बसते हैं।

हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उपलब्धियां हासिल करने के कगार पर हैं।

हम वर्तमान में अनिश्चितताओं और कई जिंदगियों में असमानता देखते हैं, इसलिए उम्मीद, अवसर, सम्मान और बराबरी की ओर देख रहे हैं।

हमें इन आकांक्षाओं को तेजी से और व्यापक स्तर पर हासिल करना चाहिए, जो मानव इतिहास में दुर्लभ रहा है।

हमारे दौर की चेतना और हमारी दुनिया के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की क्षमता को देखते हुए हमें अपनी संपन्न परंपराओं से सबसे ज्यादा संभावित टिकाऊ रास्ता चुनना चाहिए।

मानवता के छोटे हिस्से की सफलता का मतलब दुनिया के लिए ज्यादा संपन्न और टिकाऊ भविष्य होगा।

हम ऐसा सिर्फ आपके नेतृत्व और सहयोग से ही हासिल कर सकते हैं।

विक्रम साराभाई के शब्दों में हमें यह तब एहसास होगा, 'जब हम वैज्ञानिकों को उनकी विशेषज्ञता वाले क्षेत्र के बाहर काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।'।

विज्ञान का प्रभाव तब सबसे ज्यादा होगा, जब वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीविद् अपनी जांच और इंजीनियरिंग के केंद्र में उस सिद्धांत को रखेंगे जिसे मैं 'पांच ई' कहता हूँ।

अर्थव्यवस्था (इकोनॉमी)- जब हम लागत के लिहाज से किफायती और कुशल समाधान पाते हैं

पर्यावरण (इनवॉयर्नमेंट)- जब कार्बन उत्सर्जन कम हो जाए और पारिस्थितिकी पर उसका प्रभाव जितना संभव हो कम हो

ऊर्जा (एनर्जी)- जब हमारी संपन्नता ऊर्जा पर कम निर्भर करती है और ऊर्जा को हम आकाश को नीला रखने और धरती को हरा-भरा रखने में इस्तेमाल करते हैं।

सहानुभूति (इमपैथी)- जब हमारे प्रयास हमारी संस्कृति, परिस्थितियों और सामाजिक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए किए जाएं।

समानता (इक्विटी)-जब विज्ञान समावेशी विकास को बढ़ावा देता है और कमजोरों के कल्याण में सुधार करता है

इस साल हम विज्ञान के इतिहास के एक अहम क्षण का सौवां साल मनाने जा रहे हैं, जब अलबर्ट आइंस्टीन ने 1916 में 'द फाउंडेशन ऑफ द जनरल थिओरी ऑफ रिलेटिविटी' को प्रकाशित किया। आज हमें मानवता याद करना चाहिए जो उनके विचारों को इस तरह जाहिर करती है, 'सभी तकनीक पहलों में खुद मान और उनके भाग्य को हमेशा मुख्य रूप से ध्यान रखना चाहिए।'

चाहे हम सार्वजनिक जीवन में हों, या हम निजी क्षेत्र से हों और चाहे हम कारोबार में या विज्ञान से हों, हमारे लिए इससे बड़ा कोई कर्तव्य नहीं हो सकता है कि जब हम इस ग्रह से जाएं तो अगली पीढ़ी के लिए इसे बेहतर स्थिति में छोड़कर जाएं।

चलिए विज्ञान, तकनीक और इंजीनियरिंग के विभिन्न क्षेत्रों को संयुक्त रूप से इस समान उद्देश्य में लगा दें।

आपका धन्यवाद।

आरके/एस/ एमपी/केजे-27

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

28-अप्रैल-2016 15:35 IST

आईआरएनएसएस-1जी के सफल प्रक्षेपण के बाद प्रधानमंत्री के वक्तव्य का मूल पाठ

मैं सबसे पहले ISRO के सभी वैज्ञानिकों को और ISRO की पूरी टीम को हृदय से बहुत बहुत धन्यवाद करता हूँ, उनका अभिनन्दन करता हूँ। मैं सवा सौ करोड़ देशवासियों को भी इस नए नजराने के लिए अनेक अनेक शुभकामनाएँ देता हूँ। स्पेस साइंस में भारत के वैज्ञानिकों ने अविरथ पुरुषार्थ करके अनेक सिद्धियाँ प्राप्त की हैं और आज देश अनुभव कर रहा है। स्पेस साइंस के माध्यम से सामान्य मानविकी के जीवन में भी कितना बदलाव लाया जा सकता है। टेक्नोलॉजी मनुष्य के जीवन में भी किस प्रकार से उपकारक हो सकती है और भारत का स्पेस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में पदार्पण भारत के सामान्य मानव की जिन्दगी में बदलाव के लिए, व्यवस्था में सुधार के लिए, सुगमता के लिए एक बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रहा है।

आज नेविगेशन के क्षेत्र में भारत ने अपना 7वां सेटेलाइट लॉन्च किया है। सातों सेटेलाइट, एक के बाद एक सफलतापूर्वक लॉन्च किये गए। और इस सिद्धि के कारण आज भारत दुनिया के उन पाँच देशों में आज गर्व के साथ खड़ा हो गया कि जिसमें उसकी अपनी GPS सिस्टम, उसकी अपनी नेविगेशन सेटेलाइट सिस्टम निर्मित हो गयी। आज तक हम GPS सिस्टम के लिए अन्य देशों की व्यवस्थाओं पर निर्भर थे। आज हम आत्मनिर्भर बने हैं। हमारे रास्ते हम तय करेंगे, कैसे जाना, कहाँ जाना, कैसे पहुँचना, यह हमारी अपने टेक्नोलॉजी के माध्यम से होगा।

और इसलिए भारत के वैज्ञानिकों ने आज 125 करोड़ देशवासियों को एक अनमोल तोहफा दिया है। हम जानते हैं कि आज के इस युग में जी पी एस सिस्टम का बहुत बड़ा रोल हो गया है। हमारा एक मछुआरा भी इस व्यवस्था के तहत मछली का कैच कहाँ ज्यादा है, मछली कैच करने के लिए कहाँ जाना चाहिए, shortest route कौनसा होगा यह अब भारतीय सेटेलाइट के मार्गदर्शन में काम कर पायेगा। आसमान से उसको रास्ता दिखाया जाएगा। मंजिल का पक्का address तय किया जाएगा। अब हमारे विमानों को अगर लैंड करना है तो बहुत सरलता से, accuracy के साथ अपनी भारतीय व्यवस्था से वह कर पायेंगे। कहीं कोई disaster हो गया, बहुत बड़ी प्राकृतिक आपदा हो गयी, उस स्थिति में कैसे मदद पहुँचानी है, कहाँ पहुँचानी है, specific location क्या होगा, यह सारी व्यवस्थाएँ इस भारतीय उपग्रह के द्वारा जो नयी व्यवस्था विकसित हुयी है, उसके कारण लाभ मिलने वाला है। इसकी क्षमता इतनी है कि कश्मीर से कन्याकुमारी, कच्छ से कामरूप तक वह भारत के हर कोने को तो सेवा देगा ही देगा लेकिन इसके अतिरिक्त 1500 वर्ग किलोमीटर area में भी अगर कोई सेवाएँ लेना चाहता है तो भी उसको यह सेवाएँ उपलब्ध होंगी। कहने का मतलब यह है कि हमारे पड़ोस के जो SAARC देश हमसे जुड़े हुए हैं वह भी अगर भारत की इस सेवा का उपयोग करना चाहते हैं क्योंकि आज वे भी दुनिया के किसी न किसी देश की सेवाएँ ले करके अपना गुजारा करते हैं। अब भारत भी, अगर वह चाहते हैं तो यह सेवा उनको उपलब्ध करा सकता है।

एक प्रकार से सदियों पहले हमारे नाविक समंदर में कूद जाते थे, सितारों के सहारे, चन्द्र और सूर्य की गति के सहारे वह अपनी राह तय करते थे और मंजिल पर पहुँचने का प्रयास करते थे। सदियों से हमारे नाविक अनजान जगह पर पहुँचते थे और उनका सहारा हुआ करता था आसमानी सितारों, चन्द्र और सूर्य की गति के सहारे वह अपने रास्ते तय करते थे। अब विज्ञान की मदद से हम इस सेटेलाइट और टेक्नोलॉजी के माध्यम से इस काम को करने जा रहे हैं। भारत के मछुआरे, भारत के नाविक समंदर में साहस के साथ चलने वाली हमारी सदियों पुरानी हमारी परंपरा, इसने एक अनभिज्ञ जगह पर एक अनजान जगह पर जाने के रास्ते साहस के सिखाये हैं और इसलिए हजारों साल से मछुआरों ने जो साहस दिखाया है, नाविकों ने जो अदम्य साहस से दुनिया में पहुँचने का प्रयास किया है और इसलिए इस पूरी नई टेक्नोलॉजी के माध्यम से मिलने वाली सेवाओं को आज हमने तय किया है कि यह सारी व्यवस्था, हमारी यह जीपीएस सिस्टम “नाविक” नाम से जानी जायेगी।

इस व्यवस्था को मैं देश के करोड़ों करोड़ों मछुआरों की सदियों पुरानी परम्पराओं को आदर्श मानते हुए देश के गराब गरीब मछुआरों को यह पूरी व्यवस्था समर्पित करने के इरादे से आज इसे ‘नाविक’ नाम से विश्व पहचानेगा और ‘नाविक’ नाम से अब यह सेवा उपलब्ध होगी। यह हमारा अपना नाविक होगा। हमारे मोबाइल फोन में हमारा नाविक होगा। जो नाविक हमें, हम कहाँ हैं उसका पता दे सकता है, कहाँ जाना है उसका रास्ता दे सकता है और कहाँ पहुँचना है, उसका भी हमें वह

नाविक रास्ता दिखाएगा। और जब मैं नाविक की बात कर रहा हूँ तो, टेक्नोलोजी की भाषा में अगर मुझे कहना है तो मैं कहूँगा कि navigation satellite system जोकि Navigation with Indian Constellation, NAVIC , इस रूप में आज आपके सामने समर्पित करता हूँ।

सवा सौ करोड़ देशवासियों को आज एक नया नाविक मिल गया, नाविक जो हमें अपने रास्ते तय करने के लिए, अपना destination तय करने के लिए हमारी मौजूदगी महसूस कराने के लिए काम आएगा। यह आसमानी व्यवस्थाओं के लिए काम आएगा, यह जमीनी व्यवस्थाओं के लिए काम आएगा, यह जल की व्यवस्थाओं के लिए भी काम आएगा। हमारी shipping व्यवस्थाओं को भारत की यह सेवा ज्यादा accuracy के साथ उपलब्ध होगी।

हमारी रेलवे ; आज हम हमारी रेल कब कहाँ है उसको जानने के लिए जीपीएस का उपयोग करना पड़ता है । अब हम किस क्रॉसिंग से रेल कहाँ प्रसार हुयी, कितने सिग्नल से कहाँ दूर है, कहीं रेलवे की चालू ट्रेन में कोई सिग्नल देना है , सूचना देनी है तो यह नाविक के सहारे हम दे सकते हैं। हम कार से जा रहे हैं स्कूटर से जा रहे हैं , हमारे हाथ में मोबाइल फोन है, हम नाविक के सहारे तय कर सकते हैं, कितना पहुंचे, कहाँ पहुँचना है , कहाँ खड़े हैं। एक प्रकार से जन सामान्य की आवश्यकताओं की पूर्ति का काम अब हमारे वैज्ञानिकों ने Make in India, Made in India, Made for Indian यह सपना साकार किया है । मैं आज इस शुभ अवसर पर सवा सौ करोड़ देशवासियों को अपना नाविक देते हुए अत्यंत हर्ष और गर्व अनुभव कर रहा हूँ। और मैं देश के वैज्ञानिकों को फिर एक बार कोटि कोटि बधाईयाँ देता हूँ। बहुत बहुत अभिनन्दन करता हूँ और मुझे विश्वास है कि हमारे स्पेस के साइंटिस्ट और नए करतब दिखायेंगे, और नई खोज दिखायेंगे और भारत का नाम आसमान के उन क्षितिजों को पार करते हुए विश्व में लहराएगा हमारा झन्डा, इसी अपेक्षा के साथ बहुत बहुत शुभकामनाएँ बहुत बहुत बधाई ।

बहुत बहुत धन्यवाद

अतुल कुमार तिवारी/ हिमांशु सिंह-2269

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

01-May-2016 22:21 IST

Text of PM's address at the launch of environment friendly "E-Boats" at Assi Ghat, Varanasi

आपने मुझे देश की सबसे बड़ी पंचायत में आशीर्वाद दे करके भेजा। आपने मुझे इतना भरपूर प्यार दिया, इतना भरपूर प्यार दिया है कि जो आज मुझे कार्य करने की प्रेरणा भी देता है ऊर्जा भी देता है। और इसके लिए मैं इस पवित्र धरती का आभारी हूँ। यहां के लाखों-लाखों भाइयों बहनों का आभारी हूँ, भोले बाबा का आभारी हूँ, मां गंगा का आभारी हूँ।

आज मैं सुबह बलिया में था और अभी काशी में अनेक कार्यक्रम करता-करता आप सबके बीच पहुंचा हूँ। हमारे देश में दुर्भाग्य से राजनीति उस रूप में चलाई गई कि जिसमें हमेशा योजनाएं वही बनीं जिस योजनाओं से वोट बैंक मजबूत बनती रहे। देश का नागरिक मजबूत बने या ना बने, देश का गरीब मजबूत बने या न बने, हिन्दुस्तान के गांव, मोहल्ले, शहर मजबूत बने या न बनें, हिन्दुस्तान मजबूत बने या न बने लेकिन वोट बैंक मजबूत बनती रहनी चाहिए, यही कारोबार चला। अगर पहले निषाद भाइयों के वोट चाहिए तो क्या चर्चा हुआ करती थी, डीजल का थोड़ा दाम कम करो, एक रुपया कम करो जरा, निषाद लोग खुश हो जाएंगे तो वोट दे देंगे। कुछ ऐसी ही बातें हमेशा चलती रहीं। लेकिन जब तक हम समस्याओं की जड़ में नहीं जाते, और जड़ से समस्या का समाधान करने का प्रयास नहीं करते हैं तो आप चुनाव लड़ते जाएंगे, चुनाव जीतते जाएंगे लेकिन मेरा गरीब और गरीब बनता जाएगा और मुसीबत झेलता जाएगा। और इसलिए हमने जो भी योजनाएं बनाई वो योजनाएं गरीब को वो ताकत देती हैं ताकि गरीब स्वयं गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए हिम्मत रखें, गरीब खुद ही अपने गरीबाई को खत्म करें, करीब खुद ही गरीबी को परास्त करके विजयी हो करे निकलें, उस दिशा में हम काम कर रहे हैं।

आपने देखा होगा, प्रधानमंत्री जन-धन योजना, ये प्रधानमंत्री जन-धन योजना देश आजाद होने के बाद 70 साल होने आए हैं लेकिन इस देश के 40 प्रतिशत लोग जिन्हें बैंक का दरवाजा देखने का सौभाग्य नहीं मिला था, बैंक में खाता खोलने की बात तो छोड़ दीजिए उसने कभी सोचा नहीं था कि वो भी कभी बैंक में जा सकता है। हमने बीड़ा उठाया, क्या ये बैंक गरीबों के लिए होनी चाहिए कि नहीं होनी चाहिए? गरीबों का बैंकों पर हक होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए? अगर गरीब बैंक से पैसा लेना चाहता है तो मिलना चाहिए कि नहीं मिलना चाहिए? क्या गरीबों को अब भी साहूकारों के यहां जा करके ऊंचे ब्याज से पैसे लेने के लिए मजबूर होना पड़े वो अच्छी बात है क्या? और इसलिए भाइयो, बहनों हमने करीब 21 करोड़ से ज्यादा नागरिक इनके प्रधानमंत्री जन-धन योजना के बैंक एकाउंट खुलवा दिए और बैंक एकाउंट खुलने के समय हमने कहा था आप चिंता मत कीजिए आपके पास पैसे हैं कि नहीं हैं। बैंक वाले हमें कहते रहे साहब दस रुपया तो लेने दीजिए ये स्टेशनरी का खर्चा होता है, फार्म का खर्चा होता है, मुलाजिम का खर्चा होता है, ये मुफ्त में करेंगे तो बहुत घाटा हो जाएगा। मैंने कहा जो होगा सो होगा, गरीब के लिए बैंक होती है घाटा होगा तो गरीब के लिए मुझ मंजूर है।

मैंने गरीबों के लिए कहा कि जीरो बैलेंस से बैंक एकाउंट खुलेगा, जीरो बैलेंस से। जीरो बैलेंस से बैंक एकाउंट खुलेगा और धन्यवाद, धन्यवाद भइया, इसका प्यार इतना बढ़ गया। हमने कहा जीरो बैलेंस होगा जीरो, एक नया पैसा नहीं होगा तो भी गरीब का बैंक का खाता खुलेगा। लेकिन इस देश का गरीब, जेब तो खाली होगा लेकिन उसका दिल कभी खाली नहीं होता है। जेब में पैसे नहीं होंगे लेकिन गरीब के मन की उदारता में कभी कटौती नहीं आती है। मोदी ने तो कह दिया था कि गरीबों को एक रुपया देने की जरूरत नहीं है खाता खुलवा दीजिए। लेकिन मेरे देश के गरीबों की अमीरी देखिए, अमीरों की गरीबी तो बहुत देखी, कभी गरीबों की अमीरी भी तो देखा करिए। और मैं आज सीना तान करके कह सकता हूँ, सर उठा करके कह सकता हूँ कि मेरे देश के गरीब कुछ भी मुफ्त का नहीं चाहते हैं। जीरो बैलेंस से एकाउंट खुलना था लेकिन मेरे

देश के गरीबों ने 35 हजार करोड़ रुपया बैंकों में जमा कराया, 35 हजार करोड़ रुपया।

जिस देश के गरीब ऐसी ऊंची भावना रखते हों, उन गरीबों के लिए जिंदगी खपाने का आनंद आएगा कि नहीं आएगा? उनके लिए काम करने का मजा आएगा कि नहीं आएगा? ऐसे गरीबों के लिए काम करें तो जीवन में संतोष मिलेगा कि नहीं मिलेगा? और इसलिए भाइयो, बहनों मुझे इतना आनंद इतना संतोष होता है, मेरे इन गरीब भाइयो, बहनों के लिए काम करता हूं, दिन-रात दौड़ने का मन करता रहता है। हमने प्रधानमंत्री जन-धन योजना में जो बैंक खाता खोलेगा लेकिन वो पड़ा रहने देना नहीं है, भले 5 रुपया है तो 5 रुपया जाना है, डालना है, निकालना है, डालना है, निकालना है। वो बैंक वाला मेहनत करेगा, करने दो। आप आदत डालो, बैंक में जाने की आदत डालो। बैंक वालों को भूलने मत दो। उनको भूलने मत दो। उनको याद रखना चाहिए कि देश गरीबों के लिए है, ये सरकार गरीबों के लिए है, ये बैंक भी गरीबों के लिए है। लेकिन अगर आप बैंक में जाना ही बंद कर दोगे तो वो तो भूल जाएगा। तो मेरी देश के सभी गरीबों से प्रार्थना है कि अपने जन-धन एकाउंट खोला है लेकिन महीने में एक दो बार बैंक में जाया करो। पांच, दस रुपया, पंद्रह रुपया रखते चलो कभी जरूरत पड़े तो निकालते चलो। बैंक में आप काम लेना सीखो। और अगर वो गया तो सरकार में गरीब अगर बैंक में खाता खोलता है तो उसका दो लाख रुपये का बीमा लिया है मैंने, दो लाख रुपये का बीमा। अगर उसके परिवार में कुछ हो गया तो दो लाख रुपया उसको तुरंत पहुंच जाएगा। ये व्यवस्था की है भाइयो। लेकिन ये तब होगा अगर हमारा गरीब बैंक में regular खाता चालू रखेगा। एक बार खोला, रखा, छोड़ दिया तो ये फायदा नहीं मिलेगा। और इसलिए मैं आपका प्रतिनिधि हूं, सांसद के नाते आपने मुझे बिठाया है। मैं चाहता हूं मेरे बनारस में इसका सबसे ज्यादा फायदा लोग लें।

हमने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना लाए। ये मुद्रा योजना क्या है? हमारे देश में गरीब व्यक्ति उसको बेचारे को ज्यादा पैसे नहीं चाहिए। पांच सौ, हजार करोड़ रुपया नहीं चाहिए उसको। उसको तो पांच हजार रुपया, दस हजार रुपया, पचास हजार रुपया, लाख रुपया, दो लाख रुपया। धोबी होगा, नाई होगा, प्रसाद बेचने वाला होगा, फूल बेचने वाला होगा, पूजा का सामान बेचने वाला होगा, गरीब आदमी, छोटा-छोटा काम करने वाला चाहे दूध बेचता हो, चाय बेचता हो, बिस्कुट बेचता हो, पकौड़े बेचता हो, उसको कभी पैसों की जरूरत होती है। बैंक के दरवाजे उसके लिए बंद हैं। तो बेचारा जाता है साहूकार के पास। और साहूकार के पास जा करके ऊंचे ब्याज से पैसा लेता है। और फिर ब्याज के चक्कर में ऐसा फंस जाता है, ऐसा फंस जाता है, रुपये तो जाते ही जाते हैं, लेकिन ब्याज देने का कभी बंद नहीं होता है और पूंजी तो जाती ही नहीं है और बेचारा गरीब नया अपना धंधा रोजगार विकसित नहीं कर सकता है। हमने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना बनाई और बैंक वालों को कहा यह देश गरीबों के लिए है, यह सरकार गरीबों के लिए है, यह बैंक भी गरीबों के लिए है। बिना गारंटी ऐसे छोटे-छोटे काम करने वाले जो लोग हैं, उनको बैंक से पैसा मिलना चाहिए, लोन मिलना चाहिए। और मेरे काशी के भाईयों-बहनों मुझे आपको यह बताते हुए गर्व होता है तीन करोड़ 30 लाख उससे भी ज्यादा लोगों को करीब-करीब सवा लाख करोड़ रुपये से ज्यादा दे दिया गया। कोई गारंटी केबिना दे दिया गया। और उसने अपने कारोबार को बढ़ा दिया, एक रिक्शा थी तो दो रिक्शा ले आया। एक टेक्सी थी तो दो टेक्सी ले आया। एक नौकर रखता था तो दो नौकर रख लिया, एक अखबार बेचता था तो चार अखबार बेचना शुरू कर दिया। 10 घरों में दूध देता था तो 20 घरों में दूध पहुंचाने लग गया। उसका कारोबार वो बढ़ाने लग गया। देश के इस आर्थिक काम में 60 percent से ज्यादा पैसे लाने वाले कौन हैं, जिसको बैंक का पैसा मिला है। दलित है, आदिवासी है, ओबीसी है, पिछड़ी जाति के लोग हैं और उसमें भी 22 प्रतिशत महिलाएं हैं। जिनको बैंकों ने लाखों रुपया दिया है। और मैंने बैंक वालों को पूछा, मैंने कहा भई क्या अनुभव है, नहीं-नहीं बोले साहब ये लोग समय पर आकर ब्याज दे जा रहे हैं। समय पर आ करके अपना हफ्ता दे जा रहे हैं। कभी उनको पूछना ही नहीं पड़ता है। मैंने कहा यही तो ईमानदार लोग हैं, उनके ऊपर भरोसा कीजिए देश आगे बढ़ जाएगा। भाईयों-बहनों विकास कैसे किया जा सकता है। इसका यह उदाहरण है।

आज मैंने बलिया में रसोईगैस गरीबों को देने की योजना का प्रारंभ किया। आपको मालूम है हमारे देश में रसोईगैस है तो अड़ोस-पड़ोस के लोगों को दिखाते हैं देखो मेरे घर में रसोईगैस है। और जो केरोसिन से खाना पकाते हैं या मिट्टी के तेल से पकाते हैं या लकड़ी से पकाते हैं। उनके मन में रहता है इसके घर में तो रसोई का सिलेंडर आ गया, मेरे घर में कब

आएगा। और बेचारे गरीब लोग, सामान्य लोग एक गैस का कनेक्शन लेने के लिए नेताओं के पीछे-पीछे दौड़ते हैं, अरे साहब कुछ करो न, एक-आध किसी को बता दो न मुझे गैस का कनेक्शन मिल जाए। यही चलता है कि नहीं चलता है? यही चला है कि नहीं.. और एक जमाना था ज्यादा दूर की बात नहीं कर रहा हूँ कुछ ही साल पहले एमपी को 25 रसोईगैस के कूपन मिलते थे। एक साल में 25 और वो एमपी के घर लोग सुबह आते थे। साहब वो एक कूपन दे दो ना मुझे गैस का कनेक्शन लेना है। बेटे की शादी होने वाली है बहू शहर से आने वाली है। अगर गैस नहीं होगा तो शादी अटक जाएगी। हमें एक कनेक्शन दे दो। ऐसे दिन थे और यह नेता लोग कल आना, परसो आना। अगली बार देखेंगे, अभी खत्म हो गया। यही होता था कि नहीं होता था? भाईयों-बहनों और एमपी भी 25 गैस के कनेक्शन दिये तो बड़ा खुश हो जाता था, वाह, वाह क्या काम कर दिया है। भाईयों-बहनों वो भी एक सरकार थी जो 25 कनेक्शन के लिए बहुत बड़ा काम मानती थी और यह भी एक सरकार है। आपने बनाई हुई सरकार है यह। काशी वालों ने बिठाई हुई सरकार है यह। वो क्या कहते हैं, वो 25 कनेक्शन का काम देते थे। हमने निर्णय कर लिया तीन साल में पांच करोड़ परिवार को गैस का कनेक्शन दे देंगे।

भाईयों-बहनों यह काम मैं इसलिए कर रहा हूँ कि गरीब मां जब लकड़ी का चूला जला करके खाना पकाती है, तो एक दिन में उसके शरीर में 400 सिगारेट का धुंआ जाता है। मुझे बताइये डॉक्टर कहते हैं दो सिगारेट पिओगे तो भी कैंसर हो जाएगा। कहते हैं कि नहीं कहते हैं? सिगारेट बंद करने के लिए डॉक्टर कहते हैं कि नहीं कहते हैं? यह मेरी गरीब माताओं का क्या होता होगा। क्या इन गरीब माताओं को मरने देना चाहिए? उनको बीमार होने देना चाहिए? उनके बच्चों को बीमार होने देना चाहिए? उनको इस मुसीबत से बाहर निकालना चाहिए कि नहीं चाहिए। अमीरों के लिए तो बहुत सरकारें आकर चली गई। अमीरों को देने वाली सरकार बहुत आकर गई। यह सरकार गरीबों को देने के लिए आई है। और इसलिए भाईयों-बहनों पांच करोड़ परिवारों को यह गरीब परिवार है जिनकी किसी नेता से जान-पहचान नहीं है। जिनके पास गैस का सिलेंडर लेने के लिए कनेक्शन लेने के लिए रिश्वत देने के लिए पैसे नहीं हैं। जिसका कोई नहीं है उसके लिए यह सरकार है मेरे भाईयों-बहनों।

और इसका परिणाम यह होगा उन माताओं की तबीयत तो अच्छी होगी, बच्चों की तबीयत अच्छी होगी। घर के अंदर अब उनको समय ज्यादा मिलेगा। अब लकड़ी जलानी नहीं पड़ेगी, लकड़ी लेने के लिए जाना नहीं पड़ेगा। और अपना बाकी समय मैं कुछ काम करना है, तो आराम से कर सकते हैं। यह काम करके दिया है भाई।

आज यहां आपने देखना मेरे मछुआरा भाईयों-बहनों को ई-बोट दे रहे हैं हम ई-बोर्ड। पहले चुनाव आता था तो मछुआरों को कितना डीजल देंगे, कितने में डीजल देंगे इसी की बातें हुआ करती थी। मेरे भाईयों-बहनों आज उसको इस संकट से हम बाहर कर रहे हैं। उसको उस मुसीबत से मुक्ति दिला रहे हैं। और हम ई-बोट देना शुरू कर रहे हैं। मैंने हमारे मछुआरे भाईयों से अभी मैं बात कर रहा था। मैंने उनको पूछा कि भई बताइये, दिनभर मैं कितना डीजल लेते हो उसने कहा साहब एक दिन में 10 लीटर डीजल लग जाता है और पांच-छह घंटे सवारी करते हैं और उसका खर्चा करीब होता है 500 रुपया। एक दिन का डीजल का खर्चा होता है पांच सौ रुपया। और उसके कारण बोट में ऐसी आवाज़ आती है ऐसी आवाज़ आती है वो ट्रिस्ट बेचारा उसी से तंग हो जाता है उसको लगता है जल्दी उतर जाए तो अच्छा होगा। और वो मछुआरा भी अगर नाव में बैठ करके बताना चाहता है यह फलाना घाट है ठिकड़ा घाट है, यह दिखता है, ठिकड़ा वो दिखता है। उसको कुछ सुनाई नहीं देता है। ट्रिस्ट को मजा नहीं आता है। अगर ट्रिस्ट को मजा नहीं आएगा तो ट्रिस्ट आएगा क्या? ट्रिस्ट नहीं आएगा तो मछुआरों को रोजी-रोटी मिलेगी क्या? मेरे निशाद भाई-बहन कुछ कमाएंगे क्या? भाईयों-बहनों ई-बोट के कारण अब आवाज़ का नामो-निशान नहीं रहेगा। मैं अभी बोट में जाकर आया। तो मैंने उसको पूछा कि मशीन बंद तो नहीं कर दिया है। नहीं बोले मशीन चालू है, बिल्कुल आवाज़ नहीं आ रही है। बोले साहब बिल्कुल आवाज़ नहीं आ रही है। मुझे बताइये यह काशी के ट्रिज्म को लाभ होगा कि नहीं होगा? ऐसे नहीं पूरे ताकत से बताओ। होगा कि नहीं होगा? अब देखना जो भी ट्रिस्ट आएगा न वो पूछेगा ई-बोट कहां है, मुझे ई-बोट में बैठना है। जिसके पास ई-बोट नहीं है, वो मोदी को पकड़ेगा। मोदी जी जल्दी ई-बोट लाओ। यह होने वाला है। दूसरा, पहले उसको पांच सौ रुपया का डीजल भरना पड़ता था। अब उसकी बैटरी बोट के ऊपर छत बनाई है। उस छत के ऊपर सोलार पैनल लगेगी। इसलिए सोलार पैनल से उसकी बैटरी

चार्ज हो जाएगी। उसको एक पैसे का खर्चा नहीं होगा। मुझे बताइये एक गरीब का रोज का पांच सौ रुपया बच जाए, ऐसा कभी आपने सोचा है।

सरकारें दस रुपया देंगे, दो रुपया कम करेंगे यही करती रही आज हमें एक निर्णय से मेरे गरीब मछुआरों को रोजागर पांच सौ रुपया बच जाएगा, भाईयों-बहनों। अब वो बच्चों को पढ़ाई करवा सकेगा कि नहीं करा जाएगा? मां बीमार है तो दवाई करेगा कि नहीं करेगा? अच्छा घर में कुछ लाना है तो ला जाएगा कि नहीं जाएगा? उसकी जिंदगी में बदल आएगा कि नहीं आएगा। अब वो गरीबी के खिलाफ लड़ जाएगा कि नहीं लड़ जाएगा? अब वो गरीबी को परास्त कर सकता है कि नहीं कर सकता? अब वो गरीबी को पराजित करके विजय की मुद्रा में जी सकता है कि नहीं जी सकता है? एक निर्णय कितना बड़ा परिवर्तन ला सकता है, यह आज देख रहे हैं आप।

आने वाले दिनों में और हमारे मछुआरे भाई-बहन। इस अपनी बोट को ई-बोट में convert करने जाएंगे, तो एक-दो दिन तो लगेगा। तो यह एक-दो दिन हमारा मछुआरा भूखे मरेगा क्या? कहां जाएगा, तो हमने कहा है कि तुम्हारी बोट जब repairing में आएगी उस समय हमें उपयोग करने के लिए एक बोट हमारी तरफ से मिलेगी दो दिन उसको चला लेना। गरीब मछुआरे की जिंदगी में कैसे बदलाव लाया जा सकता है यह मैंने आज उनको समझाया। मैंने कहा बोट में हम एक चार्जर भी लगाएंगे। मोबाइल फोन का चार्जर तो जो टूरिस्ट बैठेगा उसको अगर अपना मोबाइल फोन चार्ज करना है तो उसको नाव में ही जा जाएगा। यहां बैठेगा-उतरेगा तो वो खुश हो जाएगा। आज मोबाइल फोन का बैटरी चला गया तो जैसे जिंदगी चली गई। जैसे Heart बंद हो जाता है, ऐसा हो जाता है इंसान को। छोटी-छोटी चीजों का ध्यान रखते हुए आज यह ई-बोट की शुरुआत और हमारे देश में यह पहला प्रयोग है कि जहां सोलार से चलने वाली ई-बोट का बहुत बड़ा अभियान चलेगा, यह गंगा तट पर हजारों बोट है, हजारों मेरे भाई-बहन हैं। मेरे नाविक भाई-बहन हैं, मेरे केवट भाई-बहन हैं, मेरे मछुआरे भाई-बहन हैं। और इसलिए भाईयों-बहनों मेरे जीवन के लिए आज एक बड़े संतोष का काम मुझे मिला, करने का अवसर मिला। मुझे इतना आनंद है कि जब मेरे इन मछुआरे भाईयों-बहनों को, लेकिन मैं उनको कहूंगा कि अब पांच सौ रुपया बचेंगे तो क्या करोगे? सबको मालूम है कि क्या करेगा। वो नहीं करना है। यह पैसे बचेंगे, तो बच्चों की पढ़ाई के लिए बच्चों को दूध पिलाने के लिए खर्चा करना है और पीने के लिए नहीं है। वरना तो मेरा पुण्य कहा जाएगा और इसलिए मेरे भाईयों-बहनों यह ई-बोट आज कर रहे हैं। अभी दो-तीन दिन पहले आपने देखा होगा भारत ने आसमान में सात सेटेलाइट छोड़े हैं। सात सेटेलाइट, अरबों-खरबों रुपये का खर्च किया है। और उस सेटेलाइट से भारत की अपनी जीपीएस सिस्टम बनी है। अब आप जानते हैं हमारे देश की राजनीति कैसी है। इतना बड़ा काम हुआ हो, सात सेटेलाइट छोड़े हो, इतनी बड़ी बात बनी हो, तो राजनीति में हमारा मन करेगा कि नहीं करेगा? कि हम कहे कि भई इस योजना का नाम दीनदयाल उपाध्याय रख दो, इस सेटेलाइट का नाम श्यामा प्रसाद मुखर्जी रख दो। आपने देखा है एक परिवार के कितने नाम है योजना पर। हमको भी मोह हो जाता हमें भी मुंह में पानी छूट जाता है यार। कोई अपने वाले का कर ले। कभी ये भी मन कर जाता कि किसी ऋषि मुनि का नाम दे दें। किसी संत का नाम दे दें। लेकिन मेरे प्यारे भाइयो, बहनों ये मोदी कुछ अलग मिट्टी का बना हुआ है। मैंने, मैंने मेरे किसी नेता के नाम पर इस योजना को नहीं रखा, न मेरे किसी परिवारजन के नाम पर नहीं रखा। मैंने इस योजना का नाम दिया नाविक, नाविक, नाविक नाम दिया है।

मेरे देश के करोड़ों, करोड़ों मछुआरे, उनको मैंने ये उत्तम से उत्तम श्रद्धांजलि दी है क्योंकि ये नाविक ही तो हैं जिसको कहीं जमीन नजर नहीं आती, लेकिन गहरे समंदर में छोटी नाव ले करके निकल पड़ता है। पानी के साथ जिंदादिली का खेल खेल लेता है। महीनों भर पानी में रह करके कहीं तट पर पहुंचता है और सदियों से करता आया है। ये नाविक ही तो है, और इसलिए हमने ये भारत की जीपीएस सिस्टम बनी है, उसका नाम रखा है नाविक। मेरे कोटि-कोटि मछुआरों को ये सरकार की बहुत बड़ी अंजलि है। बहुत बड़ा गौरव किया है और इसलिए दुनिया भी हमें। जब दुनिया भी पूछेगी नाविक क्या होता है तो हम समझाएंगे कि मेरे काशी में आओ बताऊं नाविक क्या होता है।

भाइयो, बहनों एक ऐसा काम किया है जो मेरे इस मछुआरा समाज को अमरत्व दे देता है, अमर बना देता है। ये काम

करने का मुझे सौभाग्य मिला है। इस E-Boat के द्वारा काशी के जीवन में एक आर्थिक क्रांति आने वाली है। आज मैंने ई-रिक्शाएं भी दीं, और इस बार तो ई-रिक्शा उनको दी हैं जो पैडल-रिक्शा चलाते थे उनकी पैडल-रिक्शा वापिस ले ली, ई-रिक्शा दे दी। और ई-रिक्शा के कारण काशी के जीवन को गति मिल जाएगी।

आने वाले दिनों में यहां के जीवन में बदलाव आएगा, पर्यावरण में बदलाव आएगा। काशी का विकास करने का मेरा एक सपना है, लेकिन उसमें मुझे एक छोटी सी मदद आपकी चाहिए, करोगे? करोगे? कहते तो हो, बाद में नहीं करते हो। अच्छा इस बार पक्का? इस बार पक्का? उधर से आवाज नहीं आ रही है, पक्का? पक्का? एक छोटा काम सफाई, स्वच्छता। अब मेरा काशी गंदा नहीं होना चाहिए। कर सकते हो कि नहीं कर सकते भाइयो? अगर एक बार हम फैसला कर लें कि हम काशी को गंदा नहीं होने देंगे, दुनिया भर के लोग यहां आते हैं, ऐसी साफ-सुथरी काशी देख के जाएं, हिन्दुस्तान का शानो-शौकत बढ़ जाएगा मेरे भाइयो-बहनों, ये काम हमें करना है। ये काम सरकार से नहीं करना है, हम भाई-बहन, नागरिक सबने करना है। अब हर-हर महादेव कह दिया तो हो जाएगा।

आप इतनी बड़ी संख्या में आए, ये नजारा अपने-आप में मां गंगा की गोद में एक ताकत देता है भाइयो, बहनों, बहुत ताकत देता है। मैं जब भी आपके पास आता हूं मेरी सारी थकान चली जाती है। एक नई ताकत ले करके जाता हूं। फिर दौड़ता हूं, फिर काम करता हूं, फिर आपके चरणों में आके बैठ जाता हूं, फिर ताकत लेके चला जाता हूं।

भाइयो, बहनों मैं आज मेरे सभी मछुआरे भाई, बहनों को ये E-boat की शुभ भेंट देते हुए बहुत ही गर्व महसूस कर रहा हूं। लेकिन मेरी अपेक्षा है, पैसे बहुत बचने वाले हैं, इन पैसे का उपयोग बच्चों के लिए करना। इन पैसे का उपयोग बच्चों की पढ़ाई के लिए करना। देखिए गरीबी से लड़ने का ये ही रास्ता है। हमें जो गरीबी मिली, हम विरासत में अपने बच्चों को गरीबी नहीं देंगे ये तो हर मां-बाप का संकल्प होना चाहिए।

भाइयो, बहनों मैं आपका बहुत आभारी हूं। और मैं इस योजना को बहुत आगे बढ़ाने के लिए देखते ही देखते सभी नाव हमारी E-boat बन जाएं और नाविक अब तो आसमान से हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। हर पर हमारे फोन पर हमें हमारा नाविक दिखेगा, उसको लेके आगे बढ़ें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी / शाहबाज़ हसीबी/ तारा, निर्मल

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

26-सितम्बर-2016 18:43 IST

CSIR के हीरक जयंती का अवसर पर प्रधानमंत्री का संबोधन

मैं अपने भाषण की शुरुआत भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन के सबसे चुनौतीपूर्ण सेटेलाइट को सफलतापूर्वक प्रक्षेपण करने पर बधाई के साथ करता हूँ।

दो भिन्न स्थानों पर एक ही पीएसएलवी प्रक्षेपण से आठ सेटेलाइट प्रक्षेपित किए गए हैं।

सीएसआईआर के 75 वें स्थापना दिवस पर इसके हीरक जयन्ती समारोह का उद्घाटन करते हुए मुझे गर्व है। इस काउंसिल के अध्यक्ष के नाते इस अवसर पर मैं सी एस आई आर हीरक जयन्ती के वर्ष भर चलने वाले समारोह में मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ।

मैं केन्द्रीय विद्यालयों के विज्ञान विषय के एक सौ पचास छात्रों के साथ-साथ आई आई टी और आई आई एस आईआर के छात्रों व रिसर्च स्कालरों का, जो आज यहां उपस्थित हैं, जो इस समारोह को लाइव देख रहे हैं, का विशेष रूप से स्वागत करता हूँ।

‘‘प्रत्येक भारतीय के लिए यह गर्व का विषय है कि सी एस आई आर आधुनिक भारत के प्रति अपने योगदान का 75वां वर्ष का समारोह आयोजित कर रहा है।

‘‘यह राष्ट्र के प्रति समर्पण की एक यात्रा है।

हमारे लोकतान्त्रिक ताने बाने पर अमिट छाप से लेकर सी एस आई आर से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने क्रियाकलाप की अमिट छाप छोड़ी है।

सी एस आई आर के अनुसंधान और विकास के चुहुंमुखी प्रयास भारत की विविधता एवं वैविध्यता का प्रतिबिम्ब हैं।

कृषि से लेकर एअरो-स्पेस तक, बाओ सेंसर से लेकर बाओ-फार्माच्युटीकल तक, कैमिकल से लेकर जलवायु परिवर्तन तक, औषधि विकास से लेकर गहरी समुद्री खोज तक, भू-विज्ञान से लेकर ऊर्जा तक, खाद्यान्न से लेकर सुगन्धि तक, ग्लास से लेकर जेनोमिक्स तक, हाऊसिंग से लेकर हेल्थकेयर तक, इन्सुलिन से लेकर इन्फोमेटिक्स तक, लैटर से लेकर हल्के लड़ाकू विभागों तक, माइक्रोव्स से लेकर माइनिंग तक, अप्टिक से लेकर अप्टिकल फाइवर्स तक, पिगमेन्ट से लेकर पावर इलेक्ट्रॉनिक्स तक, रोड से लेकर रोबोटिक्स तक, सेंसर से लेकर सौर ऊर्जा तक ट्रेक्टर से लेकर ट्रांसपोर्ट तक, यू ए बी से लेकर पानी के नीचे पोतों तक और जल स्रोतों से लेकर मौसम के पूर्वानुमानों तक – सभी क्षेत्रों में सी एस आई आर ने अपनी मौजूदगी दर्ज की है।

देश का पहला ट्रेक्टर स्वराज, बेबी मिल्क पावडर, देश के पहला सुपर कम्प्यूटर का निर्माण से सी एस आई आर के कुछेक योगदान रहे हैं।

इस सभागार के आने से पूर्व मैंने प्रदर्शनी में सी एस आई आर की उपलब्धियों को देखा है। मैं चाहूंगा कि इस प्रदर्शनी को देश के अन्य भागों में भी प्रदर्शित किया जाए, ताकि लोगों को सी एस आई आर की उपलब्धियों की जानकारी मिल सके और वे इसकी सराहना कर पायें।

हमारे प्रयास होने चाहिए कि सी एस आई आर को आधुनिक प्रौद्योगिकियों तथा आसान चुनौतियों के लिए सी एस आई आर को तैयार करें।

मेरे विचार में, सी एस आई आर को सही स्टैकहोल्डरों को एक मंच पर लाने के लिए ‘इज आफ डुईंग टेक्नोलॉजी बिजनेस’ का निर्माण करने की आवश्यकता है, ताकि ये प्रौद्योगिकियां जरूरतमंद लोगों तक पहुंच सकें।

हाल में, सी एस आई आर ने मधुमेह के रोगियों के लिए देश में पहली आयुर्वेदिक औषधि विकसित की है। आप सभी इस औषधि की क्षमता के बारे में जानते हैं। अब हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि लोगों को इस औषधि के फायदे के बारे में जानकारी दें ताकि वे इसका सर्वोत्तम उपयोग कर सकें।

इतिहास गवाह है कि आधुनिक युग में कोई भी देश तब तक विकसित नहीं हुआ, जब तक उसे विज्ञान और तकनीक का साथ नहीं मिला। इस वक्त देश 7% से अधिक विकास से आगे बढ़ रहा है और उसे वैज्ञानिक और अनुसंधान जैसे संगठनों के सहयोग की आवश्यकता है। इसलिए आपकी रणनीति का यह हिस्सा होना चाहिए कि वर्तमान चुनौतियों से निपटने के साथ ही देश के भविष्य के लिए भी हम एक रोड मैप तैयार कर रहे हैं। जैसे CSIR ने इस साल Solar Tree बनया। यह Solar Tree सिर्फ four square feet की जगह घेरता है। अब आपको यह प्रयास करना चाहिए कि कैसे देश के

कोने-कोने में यह Solar Tree पहुंचे और लोगों को उसका लाभ मिले। सौर ऊर्जा, solar energy देश में बिजली समस्या के निपटारे के लिए बहुत अहम है। आप सभी क्षेत्र में क्रांति ला सकते हैं। सरकार का लक्ष्य 2022 तक देश में hundred gigawatt सौर ऊर्जा पैदा करने का है। और उस लक्ष्य प्राप्ति के लिए सरकार को आप सब वैज्ञानिकों से पूरा सहयोग चाहिए। जैसे Solar-cell की efficiency को कैसे कम से कम लागत में अधिक से अधिक बढ़ाया जा सकता है। कोई भी तकनीक तभी कामयाब होती है जब वो देश के सामान्य मानव के काम आए।

किसान के भाईयों की आज जो आवश्यकता है, गरीब माताएं, बहनें, नौजवान अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में किस तरह की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। कैसे आपका आविष्कार या अनुसंधान उनकी मदद कर सकता है। यह लगातार सोचना होगा और परिणाम निकालकर दिखाना होगा। वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान के परिषद के गठन का मकसद भी यही है। वैज्ञानिक अनुसंधान यह आविष्कार एक दिन या एक साल का काम नहीं है, यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यही सतत प्रक्रिया एक दिन game-changer के रूप में, game-changing technology के रूप में जन्म लेती है।

CSIR बहुत पहले से इस काम को करती रही हैं। लेकिन अब एक बहुत बड़ी बदलाव की मैं आवश्यकता देखता हूं। हम रिसर्च करते रहे हैं। लेकिन क्या Time bound Delivery यह हमारा prime agenda बन सकता है क्या? मेरी आपसे बहुत सारी उम्मीदे हैं। और कभी-कभी तो लगता है कि मेरी उम्मीदें कुछ ज्यादा हैं, लेकिन इसलिए हैं, क्योंकि आप पर भरोसा है। 75 साल के आपने जो, देश को दिया है, उसके कारण मुझे लगता, शायद आप ज्यादा दे सकते हैं और मांगने वाला भी तो उसी से मांगे जो दे सकता है।

और इसलिए जब हम 75 साल मना रहे हैं, तब Time Bound Delivery, इस एक One Line agenda इसको हम कैसे आगे ला सकते हैं। अनुसंधान के साथ ही हमें Value Change को भी मजबूती के साथ Link करने पर भी ध्यान देना होगा। Research Institute के साथ, सरकार उद्योग जगत, गैर-सरकारी संगठन, सर्विस प्रोवाइडर, उपभोक्ता इनके तालमेल पर क्योंकि Coordinated efforts के बिना परिणाम नहीं मिलता है और उस पर हमें ध्यान देना होगा।

कभी-कभी ऐसा भी देखा गया है कि हम आविष्कार तो कर लेते हैं, लेकिन आम लोगों को उसका लाभ नहीं होता है, या तो कभी आम लोगों तक उसकी जानकारी नहीं पहुंचती, या आम आदमी की आवश्यकताओं के अनुसार उसका Modification नहीं होता है, सिद्धांत के तहत बहुत बढ़िया चीज होती है और इसलिए जो संसाधन उपलब्ध है और जो समस्या है, उन दोनों के बीच, मैं हम मेल बिठा करके चीजों को अगर लाएंगे, सरलीकरण करेंगे, तो मैं समझता हूं कि इसका व्याप, सामान्य मानवी की उपयोगिता के साथ, बहुत सहज रूप से, expand हो सकता है। वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थानों को भी Stake Holders से रिसर्च और Development के Stage पर Feed Back लेने को सिस्टम को भी बनाना होगा। अगर हमारा Stake Holders के साथ Interaction नहीं है, उसकी आवश्यकताओं को हम नहीं समझते हैं, तो हो सकता है कि हमारी प्रोडक्ट Competitions में बहुत बड़े-बड़े अवॉर्ड लेकर आ सकती है, ईनाम लेकर आ सकती है। बहुत बड़े-बड़े मैगजीन में आर्टिकल छप सकते हैं, लेकिन भारत जैसे देश में, उसकी सफलता, सामान्य मानवी की समस्याओं के समाधान में, वो कैसे उपयोगी होती है, वही उसका मानदंड होता है। CSIR अपनी प्रयोगशालाओं के द्वारा ऊर्जा से भरे देश के नौजवानों के लिए और ज्यादा द्वार खोलने के प्रयास करना चाहिए, कोशिश होनी चाहिए कि CSIR के labs में, ज्यादा से ज्यादा छात्रों को भी रिसर्च का मौका मिले।

हम देखते हैं कि आजकल यह टीवी वाले Talent search के लिए बहुत बड़े कार्यक्रम करते हैं, गाने बजाने वाले, नाचने वाले और देखते हैं पहले हमने सोचा नहीं इतने Talent नजर आती है छोटे-छोटे बच्चों में और इस एक field में talent नहीं है, इनकी हर क्षेत्र में talent पड़ी है। वो अवसर के तलाश में है। क्या हमारी लैब्स, इन हमारे बच्चों के लिए आकर्षण का केंद्र बन सकती है, उसका मन कर जाए चलो भाई Saturday, Sunday नहीं जाना है। मामा के घर नहीं जाना है, चलो आज लैब में चला जाऊं। साहब कुछ समय देंगे, कुछ बताएंगे तो करता रहूंगा। आपसे मैं जो बड़े-बड़े Scientist बने हैं न, वो अपना बचपन को याद करें आपमें यहीं पागलपन था, तभी तो आप यहां पहुंचे हैं, इसी पागलपन वाले बहुत लोग हैं। किसी ने आपकी अंगूली पकड़ी होगी, किसी ने आपका हाथ पकड़ा होगा। कोई आपको लैब में ले गया होगा। इन बच्चों को भी कोई ले जाए। इस देश का भाग्य बदल जाए।

CSIR को अपने संसाधनों के मदद से देश में नए Entrepreneurs बनाने में भी सशक्त भूमिका निभानी होगी। हम Start-up India, Stand-up India, movement चला रहे हैं, जो नौजवान कुछ करना चाहते हैं और आपने कुछ खोज करके रखा है उस सिद्धांत से उसका परिचय करवा दिया जाए, तो product का साहस वो कर सकता है। क्या हमारा CSIR का Movement और भारत सरकार का, Stand up India का movement जिसके कारण युवा पीढ़ी जो नया कर गुजरना चाहती हैं और हमारे पास एक प्रकार की शोध हैं, उसके पास एक समस्या हैं, आपकी शोध, समस्या, और उसकी product Zeal ये तीनों मिलकर एक नई चीज, दुनिया को दे सकती है, एक नया क्षेत्र खुल सकता है क्या और यह संभव है। और इस संभावनाओं को हम कैसे तराशें, उस पर हम अगर काम करें तो मैं समझता हूँ, कि यह हम काफी कुछ कर सकते हैं।

विभिन्न संस्थाओं द्वारा दी जा रही Research Funding को चैनल आज करने की भी आवश्यकता है। क्या एक ऐसा Web Portal नहीं बनाया जा सकता जिस पर Funding, Research और उसके नतीजों का पूरा-पूरा ब्यौरा हो, हो सकता है कि जो आपकी Research की secret हो वो मैं open करने के लिए नहीं कह रहा हूँ, वो आपकी अमानत है, लेकिन आप चीजे तो रख सकते हैं, वरना क्या होता है एक लैब में जो काम हो रहा है, उसी प्रकार का काम दूसरी लैब में भी दस लोग कर रहे हैं। हमारी एनर्जी waste हो रही हैं, हमारा Funding waste हो रहा है, अगर एक प्लेटफॉर्म होगा सब लोग देखेंगे हां भाई यह दस चीज ऐसी हैं, जो आज हवा में हैं, मैंने उसको पकड़ने की कोशिश की है, लेकिन वह already काम चल रहा है, चलिए मैं 11वीं पर जाता हूँ। यह हम एक portal बना करके और मैं समझता हूँ, कि अच्छा इससे यह भी होगा कि हम लोगों को Question भी रख सकते हैं, समस्या भी रख सकते हैं, वो नये सिरे सोचते हैं हां मैंने भी यातना सोचा है, मैं आगे कर सकता हूँ।

भारत सरकार ने 2022 जबकि देश के आजादी के 75 साल हो गये हैं और देश की आजादी के 75 साल जैसे आपके CSIR के 75 साल एक आपके मन में उमंग है उत्साह है, देश की आजादी के 75 साल यह भी एक उमंग उत्साह और नये कुछ कर गुजरने के कारण बनना चाहिए। अभी हमारे पास कुछ वर्ष बीच में है, हम 2022 में है, देश के किसानों की income, double करने का लक्ष्य ले करके चल रहे हैं, इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए, आपको फसलों की नई Variety तैयार करनी होगी। इसके विशेषतौर पर दालों की ऐसी Variety develop करें, तो Rain-fed area में पैदा की जा सकी और उनकी पैदावर भी ज्यादा हो, यह काफी हद तक शरीर में प्रोटीन की कमी से होने वाली कुपोषण की समस्या को दूर करने में मदद मिलेगा।

अगर हम 2022 agriculture sector में income, double करने का सपना और खास करके हमारे देश के इस गरीब मानवी की प्रोटीन requirement और प्रोटीन की प्राप्ति का आधार Pulses हैं, तो उसमें हम कैसे Intervention करें, प्रति हैक्टर yield कैसे बढ़े, जो हमारे Pulses हों, उसमें प्रोटीन कैसे बढ़े, और यह आज के वैज्ञानिक युग में, genetic science के युग में, intervention से हमारा scientist कर सकता है और हमारा किसान भी, अभी मैं देश के दूर-सुदूर इलाकों के किसानों से बातचीत करके आया, आपने यहां पर देखा होगा, कुछ न कुछ नया करने का इरादा है उनके मन में। क्या हमारे वैज्ञानिक इसको गति दे सकते हैं, दिशा दे सकते हैं और तय समय में परिणाम दे सकते हैं। वैज्ञानिकों को सब्जियों की नई किस्में भी विकसित करनी चाहिए। हमारा उद्देश्य न सिर्फ उत्पादन और खपत के gap को कम करने का होना चाहिए बल्कि दूसरे क्षेत्र में निर्यात करने का भी होना चाहिए। मैं निर्यात की बात इसलिए कर रहा हूँ कि मैं पिछले दिनों Gulf Countries में गया था। वे एक समस्या से जूझ रहे हैं, उनका कहना है कि हमारे यहां तो एक इंच भी पानी, बरसा नहीं होती है। हमें खाने के लिए हर चीज बाहर से लानी पड़ती है। फल-फल, सब्जी, अनाज सबकुछ। हमारी population बढ़ रही है, पेट्रोलियम, डॉलर है, हमारे पास, धन बहुत है, संपत्ति बहुत है। लेकिन चीजे हमें बाहर से लानी पड़ेगी। क्या हम Gulf Countries की requirement को ध्यान में रखते हुए, यहां से उस प्रकार के requirement को हम export करें। हमारे agriculture area में focused, targeted ऐसी चीजे develop करने की दिशा में सोच सकते हैं, ताकि assured market आने वाले पचास सौ साल तक हम प्राप्त कर सकते हैं। quality भी हो, quantity भी हो। दुनिया के completion में वो affordable हो। मुझे विश्वास है कि हमारे वैज्ञानिक इस लक्ष्य को पार कर सकते हैं तो भारत के किसान की economy को तो फायदा होगा ही होगा। लेकिन हमारे पड़ोस में Gulf Countries की requirement को भी बहुत nearest हम हैं। उनको सबसे कम खर्च में चीजें पहुंचाने की संभावना वाला कोई देश है, तो हिंदुस्तान है। ऐसा अवसर हम क्यों जाने दे और इसलिए agriculture sector में हम कई चीजों पर सोच सकते हैं।

CSIR ने Health Sector के लिए काफी कुछ अच्छा किया है। लेकिन हमारे देश में लोगों को आज भी टीबी, मलेरिया, चिकनगुनिया, डेंगू ऐसी बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। CSIR इन बीमारियों से कैसे राहत दिला सकता है। इस पर समयबद्ध लक्ष्य के साथ research किये जाने की आवश्यकता है। जैसे कि क्या हम diagnostic kits develop करें, जो cost effective हो और बीमारियों की जल्दी जांच में सहायता करें। क्योंकि आज Health Sector ज्यादातर technology driven हो चुका है। डॉक्टर ज्यादा जांच नहीं करता, ज्यादा मशीन जांच करता है। आपके भीतर क्या कमी, क्या तकलीफ है वो मशीन तय करता है। डॉक्टर एक सॉफ्टवेयर की तरह फिर उसमें से निकालता है यह तो यह देना, अब यह देना, वो बाद में देना, यह स्थिति आ गई है। जब technology driven पूरा medical science हो गया है। तो मैं समझता हूँ कि आपके लिए बहुत बड़ी opportunity है। सिर्फ दवाईयां नहीं, यह kit की जो मेरी कल्पना है, वो हम जितनी ज्यादा.. गांव के अंदर भी एक ASHA worker के पास kit होगी वो तय कर सकती है कि ये कठिनाईयां हैं और इसके लिए ये किया जा सकता है और वो technologically इतना well-connected हो कि हम epidemic को भी तुरंत जांच सकते हैं। संभावनाओं को हम देख सकते हैं। और यह आज के युग में सबकुछ संभव है। मैं आशा करता हूँ कि हम एक mass-scale पर चीजों को address करने की दिशा में अनुसंधान के नये क्षेत्रों की ओर जा सकते हैं क्या? और हमारे नौजवानों को हम चुनौती दे, अवसर दे, वे कुछ करके दिखाएंगे यह मेरा विश्वास है।

और हम यह भी जानते हैं कि गरीब को बीमारी का सबसे बड़ा कारण है तो गंदगी है। अब मैं यह आपको तो नहीं कहता हूँ कि आप गंदगी साफ करने जाइये। लेकिन टेक्नोलॉजी के द्वारा हम disposal के संबंध में नये अनुसंधान करके affordable technology develop कर सकते हैं। कोई बहुत बड़ा रॉकेट साइंस नहीं होगा। लेकिन जो नये-नये star-up है यह इतना बड़ा व्यवसाय की संभावना है कि हम Waste management, Waste to wealth creation इन सारी चीजों में हम technology intervention जितना ज्यादा देंगे, तो गंदगी को भी लोग एक व्यापार में बदल सकते हैं और स्वच्छता अपने आप आ सकती है जो देश के health sector को बहुत बड़ी मदद कर सकती है। Even nutrition के issue को भी गंदगी से मुक्ति से, हम address कर सकते हैं। अगर गंदगी से मुक्ति होती है, तो हम पेयजल में शुद्धता को भी बल दे सकते हैं। और पेय जल की शुद्धता drinking water में अगर शुद्धता है, तो कई बीमारियों से मुक्ति का मार्ग बन जाती है। यह सारी चीजें ऐसी हैं जो सिर्फ medical science तक limited नहीं है। वैज्ञानिक जगत के intervention की आवश्यकता है। ऐसा नहीं है कि दुनिया में technology नहीं है। भारत को affordable technology के लिए आपको intervention चाहिए।

हमारे उपलब्ध संसाधनों के आधार पर technology develop हो यह हमारी आवश्यकता है। और उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए.. कभी-कभार क्या होता है कि हमारे मन में ख्याल आया कि हम खोज करते रहते हैं उसका उपयोग 50 साल 100 साल के बाद होगा। हमारे सामने जो समस्याएं हैं उन समस्याओं को ध्यान में रख करके हम विज्ञान को ले जाएं, मैं समझता हूँ भारत जैसे देश के लिए वो पहली आवश्यकता है। और अगर इन आवश्यकताओं में सफलता मिलेगी। वो सफलता अपने आप में आपको global level की आवश्यकता या नये युग की आवश्यकताओं के साथ research करने की ताकत दे सकती है।

CSIR water security पर भी काफी कार्य किया है। लेकिन अपने water resources को economically, efficiently और effectively प्रयोग करने की दिशा में प्रयास और तेज किए जाने की आवश्यकता है। हम जानते हैं कि पानी के संकट की चर्चा बहुत होती है। हर कोई लिखता है युद्ध की संभावनाएं पानी से सटी हुई है। अब वो जिसको लिखना है लिखते रहेंगे। लेकिन जो lab में बैठा है उसको तो समाधान खोजना होता है कि हम कैसे इस पानी के संचय को, पानी के सिंचन की ओर ध्यान दें। अब आज हम कोशिश कर रहे हैं। कृषि क्षेत्र में हमारा प्रयास है। 'per drop more crop' और अब तो मैं यह भी कहता हूँ भारत जैसे देश में जहां जमीन का महत्व बढ़ता चला गया है। और इसलिए पानी और जमीन दोनों को ध्यान में रखते हुए 'per drop more crop' है साथ-साथ 'an inch of land and bunch of crop' यह जबतक कि मिशन हम लेकर नहीं चलेंगे तो हम पानी के उपयोग का भी महत्व नहीं समझेंगे, जमीन के उपयोग का भी महत्व नहीं समझेंगे।

नदी जल प्रदूषण बहुत बड़ी समस्या के रूप में हमारे सामने है। गंगा की सफाई का काम कई वर्षों से चल रहा है। कई

सरकारें आ करके गई। हमने वैज्ञानिक तरीके ही ढूँढ़ने होंगे। जन सामान्य को प्रशिक्षित करना और वैज्ञानिक मार्ग खोजने यही चीजें हैं जो हमारी समस्याओं का समाधान दे सकती हैं। आम नागरिक की एक आवश्यकता.. अब हम देखिए आज के युग में हिंदुस्तान में जितनी जनसंख्या है उससे ज्यादा मोबाइल फोन है, लेकिन बैटरी की आयु यह उसके लिए tension का विषय है। उसको बैटरी recharge कराने के लिए बेचारे गांव के आदमियों को दूसरे गांव जाना पड़ता है और बैटरी चार्ज होने के लिए वहां खड़ा होना पड़ता है जरा बैटरी चार्ज कर दो। smart phone की बैटरी को लेकर एक परेशानी महसूस हो रही है। और ज्यादा उपयोग करते हैं वो तो बैटरी बैंक साथ ले करके घूमते हैं। क्या हमारे वैज्ञानिक इसका solution नहीं दे सकते क्या? और कितना बड़ा मार्केट है आप कल्पना कीजिए। और मैं नहीं मानता हूँ कि जो विज्ञान छोटे level पर apply हुआ है वो बड़ी ताकत के रूप में कोई enlarge न हो ऐसा नहीं हो सकता। मैं scientist नहीं हूँ लेकिन इतना तो मैं समझ सकता हूँ कि आप कर सकते हैं। अगर आप इन चीजों को priority दे, तो उसको commercial value भी बहुत है। requirement बन चुकी है।

आज आप देखिए sports खेल जगत जिस प्रकार से उसने रूप लिया है। वो सिर्फ खेल के मैदान का विषय नहीं रहा। अभी मैं वहां पर आपके प्रदर्शनी में कुछ चीजें रखी थी। उन्होंने मुझे बताया कि leather की चीजें हम कैसे बनाते हैं। मैंने उनको सवाल पूछा कि क्या कोई आपके यहां research हो रही है कि किस प्रकार के sport के लिए किस प्रकार के जूते चाहिए, किस प्रकार के costume चाहिए। इस पर कोई रिसर्च हुआ है क्या, जो उसके physical fitness में plus करता हो, comfort में plus करता हो। अभी आपने आप में बहुत बड़ा रिचर्स हो रहा है दुनिया में। क्या हम इस प्रकार की चीजें, इतना ही नहीं खिलाड़ी के पास अच्छे साधन हो, खिलाड़ी के पास अच्छे मैदान हो, अच्छा कोच हो उससे ही वो खेल जगत में सिद्धियां प्राप्त नहीं करता है। खेल जगत के development के लिए मान्य हुआ है कि एक scientific environment required होता है। उसको psychology से ले करके comfort तक की हर चीज की व्यवस्था करनी पड़ती है।

क्या भारत का वैज्ञानिक जगत, हमारे जो sport field के लोग उनके लिए उनके लिए एक बहुत बड़े व्यवसायिक क्षेत्र की संभावनाएं मैं देख रहा हूँ sports में। हम उसके लिए कोई research की चीजें एक वैज्ञानिक environment क्या हो। अब space science में आप देखते हैं जितना space में जाने वाले लोगों की चिंता होती है उतनी space के लोगों के लिए scientific environment पर उनकी ट्रेनिंग होती है तब जा करके उनको भेजा जाता है। sport की दुनिया भी उसी प्रकार की है। क्या हम उस environment के parameter तय कर सकते हैं, उसके लिए उस तरह की व्यवस्था विकसित कर सकते हैं। कहने का हमारा तात्पर्य यह है हम हम विज्ञान के क्षेत्र को इतना सामान्य मानव से जोड़े। क्योंकि 21वीं सदी एक technology driven सदी है। अगर पूरी शताब्दी technology driven होगी तो हम इस प्रकार के नये अनुसंधान को 21वीं सदी की आवश्यकता और भारत जैसे देश की आवश्यकता के साथ जोड़ सकते हैं क्या?

हमारी पारंपरिक समझ और ज्ञान को हम modern system में जोड़ सके तो भी कई समस्याओं का हल निकल सकता है। योग हो, आयुर्वेद हो आज पूरी दुनिया में उसकी चर्चा है। लेकिन उसका वैज्ञानिक रूप नहीं पहुंच पा रहा है। क्या हम उस दिशा में काम कर सकते हैं।

और आज इस अवसर पर वैज्ञानिकों को national Award देकर भी सम्मानित किया जा रहा है। जिन वैज्ञानिकों को यह सम्मान प्राप्त हो रहा है। उनको मैं बहुत बहुत बधाई देता हूँ। जिनमें 2012-15 का शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार है, 2012-14 का CSIR diamond technology jubilee Award है, ग्रामीण विकास में science and technology innovations के लिए CSIR का Award है, 2016 का CSIR technology Award है, 2016 का जी एन रामचंद्रन gold medal है, 2016 का CSIR young scientist Award दिया जा रहा है। यह सम्मान, यह Award न सिर्फ वैज्ञानिकों के लिए हैं, बल्कि उनके परिवार उनके मित्रों विशेष करके उनके शिक्षकों के लिए भी है। ऐसे शिक्षक जिन्होंने बचपन से ही उन्हें विज्ञान एवं अनुसंधान-अविष्कार के लिए प्रेरित किया।

देश को आज आप सभी पर गर्व है। मुझे उम्मीद है कि इस सफर पर आप एक नये उमंग और हौसले के साथ, और मजबूती के साथ आगे बढ़ेंगे। यह अवार्ड आपके अलावा दूसरों को भी देश के विकास के लिए आवश्यक नये अनुसंधान, नये

अविष्कार की प्रेरणा देगा। स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटियों में पढ़ने वाले नौजवान आप आपको role model की तरह देखते हैं। इस अवसर पर मैं आप सभी से अपेक्षा करता हूँ कि आप नौजवान पीढ़ी का मार्गदर्शन करने की अपनी जिम्मेदारी भी बखूबी निभाएं। CSIR से जुड़े देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में काम कर रहे वैज्ञानिकों को स्कूल कॉलेज में पढ़ने वाले छात्रों के साथ अपना सम्पर्क बढ़ाना चाहिए। क्या संभव है कि महीने में कम से कम एक बार हर वैज्ञानिक कोई न कोई कॉलेज या यूनिवर्सिटी में लेक्चर देने के लिए जाए। उनसे विचार-विमर्श करे, नई पीढ़ी से चर्चा करे। क्या संभव है कि आज जिन-जिन महानुभावों को Award मिला है वो एक स्कूल या कॉलेज को mentor के रूप में adopt करके। अगर वो एक स्कूल या कॉलेज में सिर्फ पाँच छात्रों को भी mentor के लिए पसंद करके उनके पीछे थोड़ा समय दें, तो देश में तीन सौ नये वैज्ञानिकों को उभरने की संभावना खड़ी होती है। तो जिस प्रकार से देश को आप एक नया आविष्कार भेंट करे और पीढ़ियों का भला कर सकते हैं, वैसे आप अगर देश को एक या दो scientist भी भेंट करे तो शायद सदियों का बड़ा काम करके जाएंगे।

मैं फिर एक बार आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। पचहत्तरवीं वर्षगांठ की इस महत्वपूर्ण घटना आने वाले 2022 के लिए.. आप भी तय कीजिए 2022 जब देश की आजादी के 75 साल पूरे होंगे, हम देश के लिए वैज्ञानिक दृष्टि से यह चीजें देकर रहेंगे, समय सीमा में देकर रहेंगे, देश की आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे। इसी एक संकल्प के साथ हम इस 75 वर्ष की यात्रा और आने वाले 25 साल के सपनों को ले करके आगे बढ़े इसी एक अपेक्षा के साथ आप सबको मेरी बहुत बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ हिमांशु सिंह/ सुरेंद्र कुमार / तारा

